

॥ श्री राम चरित मानस ॥

श्री गणेशाय नमः

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

श्रीरामचरितमानस

सप्तम सोपान

(उत्तरकाण्ड)

श्लोक

केकीकण्ठाभनीलं सुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिह्नं
शोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नम् ।
पाणौ नाराचचारुं कपिनिकरयुतं बन्धुना सेव्यमानं
नौमीड्यं जानकीशं रघुवरमनिशं पुष्पकारुढरामम् ॥ १ ॥

कोसलेन्द्रपदकञ्जमञ्जुलौ कोमलावजमहेशवन्दितौ ।
जानकीकरसरोजलालितौ चिन्तकस्य मनभृङ्गसङ्गिनौ ॥ २ ॥

कुन्दइन्दुदरगौरसुन्दरं अम्बिकापतिमभीष्टसिद्धिदम् ।
कारुणीककलकञ्जलोचनं नौमि शंकरमनंगमोचनम् ॥ ३ ॥

दो. रहा एक दिन अवधि कर अति आरत पुर लोग ।
जहँ तहँ सोचहिं नारि नर कूस तन राम बियोग ॥
सगुन होहिं सुंदर सकल मन प्रसन्न सब केर ।
प्रभु आगवन जनाव जनु नगर रम्य चहुँ फेर ॥
कौसल्यादि मातु सब मन अनंद अस होइ ।
आयउ प्रभु श्री अनुज जुत कहन चहत अब कोइ ॥
भरत नयन भुज दच्छिन फरकत बारहिं बार ।
जानि सगुन मन हरष अति लागे करन बिचार ॥

रहेउ एक दिन अवधि अधारा । समुझत मन दुख भयउ अपारा ॥
कारन कवन नाथ नहिं आयउ । जानि कुटिल किधौ मोहि बिसरायउ ॥
अहह धन्य लच्छिमन बड़भागी । राम पदारबिंदु अनुरागी ॥
कपटी कुटिल मोहि प्रभु चीन्हा । ताते नाथ संग नहिं लीन्हा ॥
जौ करनी समुझै प्रभु मोरी । नहिं निस्तार कलप सत कोरी ॥
जन अवगुन प्रभु मान न काऊ । दीन बंधु अति मृदुल सुभाऊ ॥
मोरि जियँ भरोस दृढ़ सोई । मिलिहहिं राम सगुन सुभ होई ॥
बीतें अवधि रहहिं जौ प्राणा । अधम कवन जग मोहि समाना ॥

दो. राम बिरह सागर महँ भरत मगन मन होत ।
बिप्र रूप धरि पवन सुत आइ गयउ जनु पोत ॥ १(क) ॥

बैठि देखि कुसासन जटा मुकुट कूस गात ।
राम राम रघुपति जपत स्त्रवत नयन जलजात ॥ १(ख) ॥

देखत हनूमान अति हरषेउ । पुलक गात लोचन जल बरषेउ ॥
मन महँ बहुत भाँति सुख मानी । बोलेउ श्रवन सुधा सम बानी ॥
जासु बिरहँ सोचहु दिन राती । रटहु निरंतर गुन गन पाँती ॥
रघुकुल तिलक सुजन सुखदाता । आयउ कुसल देव मुनि त्राता ॥
रिपु रन जीति सुजस सुर गावत । सीता सहित अनुज प्रभु आवत ॥
सुनत बचन बिसरे सब दूखा । तृषावंत जिमि पाइ पियूषा ॥
को तुम्ह तात कहाँ ते आए । मोहि परम प्रिय बचन सुनाए ॥
मारुत सुत मैं कपि हनुमाना । नामु मोर सुनु कृपानिधाना ॥
दीनबंधु रघुपति कर किंकर । सुनत भरत भेंटेउ उठि सादर ॥
मिलत प्रेम नहिं हृदयँ समाता । नयन स्त्रवत जल पुलकित गाता ॥
कपि तव दरस सकल दुख बीते । मिले आजु मोहि राम पिरिते ॥
बार बार बूझी कुसलाता । तो कहूँ देउँ काह सुनु भ्राता ॥
एहि संदेस सरिस जग माहीं । करि बिचार देखेउँ कछु नाहीं ॥
नाहिन तात उरिन मैं तोही । अब प्रभु चरित सुनावहु मोही ॥
तब हनुमंत नाइ पद माथा । कहे सकल रघुपति गुन गाथा ॥
कहु कपि कबहुँ कृपाल गोसाई । सुमिरहिं मोहि दास की नाई ॥

छं. निज दास ज्यों रघुबंसभूषन कबहुँ मम सुमिरन कर यो ।
सुनि भरत बचन बिनीत अति कपि पुलकित तन चरनन्हि पर यो ॥
रघुबीर निज मुख जासु गुन गन कहत अग जग नाथ जो ।
काहे न होइ बिनीत परम पुनीत सदगुन सिंधु सो ॥

दो. राम प्रान प्रिय नाथ तुम्ह सत्य बचन मम तात ।
पुनि पुनि मिलत भरत सुनि हरष न हृदयँ समात ॥ २(क) ॥

सो. भरत चरन सिरु नाइ तुरित गयउ कपि राम पहिं ।
कही कुसल सब जाइ हरषि चलेउ प्रभु जान चढ़ि ॥ २(ख) ॥

हरषि भरत कोसलपुर आए । समाचार सब गुरहि सुनाए ॥
पुनि मंदिर महँ बात जनाई । आवत नगर कुसल रघुराई ॥
सुनत सकल जननी उठि धाई । कहि प्रभु कुसल भरत समुझाई ॥
समाचार पुरबासिन्ह पाए । नर अरु नारि हरषि सब धाए ॥
दधि दुर्बा रोचन फल फूला । नव तुलसी दल मंगल मूला ॥
भरि भरि हेम थार भामिनी । गावत चलिं सिंधु सिंधुरगामिनी ॥
जे जैसेहिं तैसेहिं उठि धावहिं । बाल बूद्ध कहँ संग न लावहिं ॥
एक एकन्ह कहँ बूझहिं भाई । तुम्ह देखे दयाल रघुराई ॥
अवधपुरी प्रभु आवत जानी । भई सकल सोभा कै खानी ॥
बहइ सुहावन त्रिविध समीरा । भइ सरजू अति निर्मल नीरा ॥

दो. हरषित गुर परिजन अनुज भूसुर बृंद समेत ।
चले भरत मन प्रेम अति सन्मुख कृपानिकेत ॥ ३(क) ॥

बहुतक चढ़ी अटारिन्ह निरखहिं गगन विमान ।
देखि मधुर सुर हरषित करहिं सुमंगल गान ॥ ३(ख) ॥

राका ससि रघुपति पुर सिंधु देखि हरषान ।
बढ़यो कोलाहल करत जनु नारि तरंग समान ॥ ३(ग) ॥

इहाँ भानुकुल कमल दिवाकर । कपिन्ह देखावत नगर मनोहर ॥
सुनु कपीस अंगद लकेसा । पावन पुरी रुचिर यह देसा ॥
जद्यपि सब बैकुंठ बखाना । बेद पुरान विदित जगु जाना ॥
अवधपुरी सम प्रिय नहिं सोऊ । यह प्रसंग जानइ कोउ कोऊ ॥
जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि । उत्तर दिसि बह सरजू पावनि ॥
जा मज्जन ते बिनहिं प्रयासा । मम समीप नर पावहिं बासा ॥
अति प्रिय मोहि इहाँ के बासी । मम धामदा पुरी सुख रासी ॥
हरषे सब कपि सुनि प्रभु बानी । धन्य अवध जो राम बखानी ॥

दो. आवत देखि लोग सब कृपासिंधु भगवान ।
नगर निकट प्रभु प्रेरेउ उतरेउ भूमि विमान ॥ ४(क) ॥

उतरि कहेउ प्रभु पुष्पकहि तुम्ह कुबेर पहिं जाहु ।
प्रेरित राम चलेउ सो हरषु बिरहु अति ताहु ॥ ४(ख) ॥

आए भरत संग सब लोगा । कूस तन श्रीरघुबीर बियोगा ॥
बामदेव बसिष्ठ मुनिनायक । देखे प्रभु महि धरि धनु सायक ॥
धाइ धरे गुर चरन सरोरुह । अनुज सहित अति पुलक तनोरुह ॥
भेंटि कुसल बूझी मुनिराया । हमरें कुसल तुम्हारिहिं दाया ॥
सकल द्विजन्ह मिलि नायउ माथा । धर्म धुरंधर रघुकुलनाथा ॥
गहे भरत पुनि प्रभु पद पंकज । नमत जिन्हहि सुर मुनि संकर अज ॥
परे भूमि नहिं उठत उठाए । बर करि कृपासिंधु उर लाए ॥
स्यामल गात रोम भए ठाढ़े । नव राजीव नयन जल बाढ़े ॥

छं. राजीव लोचन स्त्रवत जल तन ललित पुलकावलि बनी ।
अति प्रेम हृदयँ लगाइ अनुजहि मिले प्रभु त्रिभुअन धनी ॥
प्रभु मिलत अनुजहि सोह मो पहिं जाति नहिं उपमा कही ।
जनु प्रेम अरु सिंगार तनु धरि मिले बर सुषमा लही ॥ १ ॥

बूझत कृपानिधि कुसल भरतहि बचन बेगि न आवई ।
सुनु सिवा सो सुख बचन मन ते भिन्न जान जो पावई ॥
अब कुसल कौसलनाथ आरत जानि जन दरसन दियो ।
बूझत बिरह बारीस कृपानिधान मोहि कर गहि लियो ॥ २ ॥

दो. पुनि प्रभु हरषि सत्रुहन भेंटे हृदयँ लगाइ ।
लच्छिमन भरत मिले तब परम प्रेम दोउ भाइ ॥ ५ ॥

भरतानुज लच्छिमन पुनि भेंटे । दुसह बिरह संभव दुख मेटे ॥
सीता चरन भरत सिरु नावा । अनुज समेत परम सुख पावा ॥
प्रभु बिलोकि हरषे पुरबासी । जनित बियोग बिपति सब नासी ॥
प्रेमातुर सब लोग निहारी । कौतुक कीन्ह कृपाल खरारी ॥
अमित रूप प्रगटे तेहि काला । जथाजोग मिले सबहि कृपाला ॥
कृपादृष्टि रघुबीर बिलोकी । किए सकल नर नारि विसोकी ॥
छन महिं सबहि मिले भगवाना । उमा मरम यह काहुँ न जाना ॥
एहि विधि सबहि सुखी करि रामा । आगें चले सील गुन धामा ॥
कौसल्यादि मातु सब धाई । निरखि बच्छ जनु धेनु लवाई ॥

छं. जनु धेनु बालक बच्छ तजि गृहँ चरन बन परबस गई ।
दिन अंत पुर रुख स्त्रवत थन हुंकार करि धावत भई ॥
अति प्रेम सब मातु भेटीं बचन मृदु बहुबिधि कहे ।
गइ बिषम बियोग भव तिन्ह हरष सुख अगनित लहे ॥

दो. भेटेउ तनय सुमित्राँ राम चरन रति जानि ।
रामहि मिलत कैकेई हृदयँ बहुत सकुचानि ॥ ६(क) ॥

लच्छिमन सब मातन्ह मिलि हरषे आसिष पाइ ।
कैकेइ कहँ पुनि पुनि मिले मन कर छोभु न जाइ ॥ ६ ॥

सासुन्ह सबनि मिली बैदेही । चरनन्हि लागि हरषु अति तेही ॥
देहिं असीस बूझि कुसलाता । होइ अचल तुम्हार अहिवाता ॥
सब रघुपति मुख कमल बिलोकिहिं । मंगल जानि नयन जल रोकहिं ॥
कनक धार आरति उतारहिं । बार बार प्रभु गात निहारहिं ॥
नाना भाँति निछावरि करही । परमानंद हरष उर भरही ॥
कौसल्या पुनि पुनि रघुबीरहि । चितवति कृपासिंधु रनधीरहि ॥
हृदयँ विचारति बारहिं बारा । कवन भाँति लंकापति मारा ॥
अति सुकुमार जुगल मेरे बारे । निसिचर सुभट महाबल भारे ॥

दो. लच्छिमन अरु सीता सहित प्रभुहि बिलोकति मातु ।
परमानंद मगन मन पुनि पुनि पुलकित गातु ॥ ७ ॥

लंकापति कपीस नल नीला । जामवंत अंगद सुभसीला ॥
हनुमदादि सब बानर बीरा । धरे मनोहर मनुज सरीरा ॥
भरत सनेह सील व्रत नेमा । सादर सब बरनहिं अति प्रेमा ॥
देखि नगरबासिन्ह कै रीती । सकल सराहहि प्रभु पद प्रीती ॥
पुनि रघुपति सब सखा बोलाए । मुनि पद लागहु सकल सिखाए ॥
गुर बसिष्ठ कुलपूज्य हमारे । इन्ह की कृपाँ दनुज रन मारे ॥
ए सब सखा सुनहु मुनि मेरे । भए समर सागर कहँ बेरे ॥
मम हित लागि जन्म इन्ह हारे । भरतहु ते मोहि अधिक पिआरे ॥
सुनि प्रभु बचन मगन सब भए । निमिष निमिष उपजत सुख नए ॥

दो. कौसल्या के चरनन्हि पुनि तिन्ह नायउ माथ ॥
आसिष दीन्हे हरषि तुम्ह प्रिय मम जिमि रघुनाथ ॥ ८(क) ॥

सुमन वृष्टि नभ संकुल भवन चले सुखकंद ।
चढ़ी अटारिन्ह देखहिं नगर नारि नर वृंद ॥ ८(ख) ॥

कंचन कलस विचित्र सँवारे । सबहिं धरे सजि निज निज द्वारे ॥
बंदनवार पताका केतू । सबन्हि बनाए मंगल हेतू ॥
बीथी सकल सुगंध सिंचाई । गजमनि रचि बहु चौक पुराई ॥
नाना भाँति सुमंगल साजे । हरषि नगर निसान बहु बाजे ॥
जहँ तहँ नारि निछावर करहीं । देहिं असीस हरष उर भरहीं ॥
कंचन थार आरती नाना । जुबती सजे करहिं सुभ गाना ॥
करहिं आरती आरतिहर केँ । रघुकुल कमल बिपिन दिनकर केँ ॥
पुर सोभा संपति कल्याना । निगम सेष सारदा बखाना ॥
तेउ यह चरित देखि ठगि रहहीं । उमा तासु गुन नर किमि कहहीं ॥

दो. नारि कुमुदिनी अवध सर रघुपति विरह दिनेस ।
अस्त भाँ बिगसत भई निरखि राम राकेस ॥ ९(क) ॥

होहिं सगुन सुभ विविध विधि बाजहिं गगन निसान ।
पुर नर नारि सनाथ करि भवन चले भगवान ॥ ९(ख) ॥

प्रभु जानी कैकेई लजानी । प्रथम तासु गृह गए भवानी ॥
ताहि प्रबोधि बहुत सुख दीन्हा । पुनि निज भवन गवन हरि कीन्हा ॥
कृपासिंधु जब मंदिर गए । पुर नर नारि सुखी सब भए ॥
गुर बसिष्ट द्विज लिए बुलाई । आजु सुघरी सुदिन समुदाई ॥
सब द्विज देहु हरषि अनुसासन । रामचंद्र बैठहिं सिंघासन ॥
मुनि बसिष्ट के बचन सुहाए । सुनत सकल बिप्रन्ह अति भाए ॥
कहहिं बचन मृदु बिप्र अनेका । जग अभिराम राम अभिषेका ॥
अब मुनिबर बिलंब नहिं कीजे । महाराज कहँ तिलक करीजे ॥

दो. तब मुनि कहेउ सुमंत्र सन सुनत चलेउ हरषाइ ।
रथ अनेक बहु बाजि गज तुरत सँवारे जाइ ॥ १०(क) ॥

जहँ तहँ धावन पठइ पुनि मंगल द्रव्य मगाइ ।
हरष समेत बसिष्ट पद पुनि सिरु नायउ आइ ॥ १०(ख) ॥

नवान्हपारायण, आठवाँ विश्राम
अवधपुरी अति रुचिर बनाई । देवन्ह सुमन वृष्टि झरि लाई ॥
राम कहा सेवकन्ह बुलाई । प्रथम सखन्ह अन्हवावहु जाई ॥
सुनत बचन जहँ तहँ जन धाए । सुग्रीवादि तुरत अन्हवाए ॥
पुनि करुनानिधि भरतु हँकारे । निज कर राम जटा निरुआरे ॥
अन्हवाए प्रभु तीनिउ भाई । भगत बछल कृपाल रघुराई ॥
भरत भाग्य प्रभु कोमलताई । सेष कोटि सत सकहिं न गाई ॥
पुनि निज जटा राम बिबराए । गुर अनुसासन मागि नहाए ॥
करि मज्जन प्रभु भूषन साजे । अंग अनंग देखि सत लाजे ॥

दो. सासुन्ह सादर जानकिहि मज्जन तुरत कराइ ।

दिव्य बसन बर भूषन अंग अंग सजे बनाइ ॥ ११(क) ॥

राम वाम दिसि सोभति रमा रूप गुन खानि ।
देखि मातु सब हरषी जन्म सुफल निज जानि ॥ ११(ख) ॥

सुनु खगेस तेहि अवसर ब्रह्मा सिव मुनि वृंद ।
चढ़ि बिमान आए सब सुर देखन सुखकंद ॥ ११(ग) ॥

प्रभु बिलोकि मुनि मन अनुरागा । तुरत दिव्य सिंघासन मागा ॥
रवि सम तेज सो बरनि न जाई । बैठे राम द्विजन्ह सिरु नाई ॥
जनकसुता समेत रघुराई । पेखि प्रहरषे मुनि समुदाई ॥
वेद मंत्र तब द्विजन्ह उचारे । नभ सुर मुनि जय जयति पुकारे ॥
प्रथम तिलक बसिष्ट मुनि कीन्हा । पुनि सब बिप्रन्ह आयसु दीन्हा ॥
सुत बिलोकि हरषी महतारी । बार बार आरती उतारी ॥
बिप्रन्ह दान विविध विधि दीन्हे । जाचक सकल अजाचक कीन्हे ॥
सिंघासन पर त्रिभुअन साई । देखि सुरन्ह दुंदुभी बजाई ॥

छं. नभ दुंदुभी बाजहिं बिपुल गंधर्व किंनर गावहीं ।
नाचहिं अपछरा वृंद परमानंद सुर मुनि पावहीं ॥
भरतादि अनुज विभीषणांगद हनुमदादि समेत ते ।
गहँ छत्र चामर व्यजन धनु असि चर्म सक्ति विराजते ॥ १ ॥

श्री सहित दिनकर बंस बूषन काम बहु छवि सोहई ।
नव अंबुधर बर गात अंबर पीत सुर मन मोहई ॥
मुकुटांगदादि विचित्र भूषन अंग अंगान्ह प्रति सजे ।
अभोज नयन बिसाल उर भुज धन्य नर निरखति जे ॥ २ ॥

दो. वह सोभा समाज सुख कहत न बनइ खगेस ।
बरनहिं सारद सेष श्रुति सो रस जान महेस ॥ १२(क) ॥

भिन्न भिन्न अस्तुति करि गए सुर निज निज धाम ।
बंदी वेष वेद तब आए जहँ श्रीराम ॥ १२(ख) ॥

प्रभु सर्वग्य कीन्हे अति आदर कृपानिधान ।
लखेउ न काहूँ मरम कछु लगे करन गुन गान ॥ १२(ग) ॥

छं. जय सगुन निर्गुन रूप अनूप भूप सिरोमने ।
दसकंधरादि प्रचंड निसिचर प्रबल खल भुज बल हने ॥
अवतार नर संसार भार बिभंजि दारुन दुख दहे ।
जय प्रनतपाल दयाल प्रभु संजुक्त सक्ति नमामहे ॥ १ ॥

तव बिषम माया बस सुरासुर नाग नर अग जग हरे ।
भव पंथ भ्रमत अमित दिवस निसि काल कर्म गुननि भरे ॥
जे नाथ करि करुना बिलोके त्रिबिधि दुख ते निर्बहे ।

भव खेद छेदन दच्छ हम् कहूँ रच्छ राम नमामहे ॥ २ ॥

जे ग्यान मान बिमत्त तव भव हरनि भक्ति न आदरी ।
ते पाइ सुर दुर्लभ पदादपि परत हम् देखत हरी ॥
विस्वास करि सब आस परिहरि दास तव जे होइ रहे ।
जपि नाम तव बिनु श्रम तरहिं भव नाथ सो समरामहे ॥ ३ ॥

जे चरन सिव अज पूज्य रज सुभ परसि मुनिपतिनी तरी ।
नख निर्गता मुनि बंदिता त्रैलोक पावनि सुरसरी ॥
ध्वज कुलिस अंकुस कंज जुत बन फिरत कंटक किन लहे ।
पद कंज द्वंद मुकुंद राम रमेस नित्य भजामहे ॥ ४ ॥

अव्यक्तमूलमनादि तरु त्वच चारि निगमागम भने ।
षट् कंध साखा पंच बीस अनेक पर्न सुमन घने ॥
फल जुगल बिधि कटु मधुर बेलि अकेलि जेहि आश्रित रहे ।
पल्लवत फूलत नवल नित संसार बिटप नमामहे ॥ ५ ॥

जे ब्रह्म अजमद्वैतमनुभवगम्य मनपर ध्यावहीं ।
ते कहूँ जानहुँ नाथ हम् तव सगुन जस नित गावहीं ॥
करुनायतन प्रभु सदगुनाकर देव यह बर मागहीं ।
मन बचन कर्म विकार तजि तव चरन हम् अनुरागहीं ॥ ६ ॥

दो. सब के देखत बेदन्ह बिनती कीन्ह उदार ।
अंतर्धान भए पुनि गए ब्रह्म आगार ॥ १३(क) ॥

बैनतेय सुनु संभु तव आए जहूँ रघुबीर ।
बिनय करत गदगद गिरा पूरित पुलक सरीर ॥ १३(ख) ॥

छं. जय राम रमारमनं समनं । भव ताप भयाकुल पाहि जनं ॥
अवधेस सुरेस रमेस बिभो । सरनागत मागत पाहि प्रभो ॥ १ ॥

दससीस बिनासन बीस भुजा । कृत दूरि महा महि भूरि रुजा ॥
रजनीचर वृंद पतंग रहे । सर पावक तेज प्रचंड दहे ॥ २ ॥

महि मंडल मंडन चारुतरं । धृत सायक चाप निषंग बरं ॥
मद मोह महा ममता रजनी । तम पुंज दिवाकर तेज अनी ॥ ३ ॥

मनजात किरात निपात किए । मृग लोग कुभोग सरेन हिए ॥
हति नाथ अनाथनि पाहि हरे । बिषया बन पावरं भूलि परे ॥ ४ ॥

बहु रोग बियोगन्हि लोग हुए । भवदंघ्रि निरादर के फल ए ॥
भव सिंधु अगाध परे नर ते । पद पंकज प्रेम न जे करते ॥ ५ ॥

अति दीन मलीन दुखी नितही । जिन्ह के पद पंकज प्रीति नहीं ॥

अवलंब भवंत कथा जिन्ह के ॥ प्रिय संत अनंत सदा तिन्ह के ॥ ६ ॥

नहिं राग न लोभ न मान मदा ॥ तिन्ह के सम बैभव वा बिपदा ॥
एहि ते तव सेवक होत मुदा । मुनि त्यागत जोग भरोस सदा ॥ ७ ॥

करि प्रेम निरंतर नेम लिए । पद पंकज सेवत सुद्ध हिए ॥
सम मानि निरादर आदरही । सब संत सुखी बिचरंति मही ॥ ८ ॥

मुनि मानस पंकज भृंग भजे । रघुबीर महा रनधीर अजे ॥
तव नाम जपामि नमामि हरी । भव रोग महागद मान अरी ॥ ९ ॥

गुन सील कृपा परमायतनं । प्रनमामि निरंतर श्रीरमनं ॥
रघुनंद निकंदय द्वंदघनं । महिपाल बिलोकय दीन जनं ॥ १० ॥

दो. बार बार बर मागउँ हरषि देहु श्रीरंग ।
पद सरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग ॥ १४(क) ॥

बरनि उमापति राम गुन हरषि गए कैलास ।
तब प्रभु कपिन्ह दिवाए सब बिधि सुखप्रद बास ॥ १४(ख) ॥

सुनु खगपति यह कथा पावनी । त्रिबिध ताप भव भय दावनी ॥
महाराज कर सुभ अभिषेका । सुनत लहहिं नर बिरति बिबेका ॥
जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं । सुख संपति नाना बिधि पावहिं ॥
सुर दुर्लभ सुख करि जग माही । अंतकाल रघुपति पुर जाही ॥
सुनहिं बिमुक्त बिरत अरु बिषई । लहहिं भगति गति संपति नई ॥
खगपति राम कथा मैं बरनी । स्वमति बिलास त्रास दुख हरनी ॥
बिरति बिबेक भगति दृढ़ करनी । मोह नदी कहूँ सुंदर तरनी ॥
नित नव मंगल कौसलपुरी । हरषित रहहिं लोग सब कुरी ॥
नित नइ प्रीति राम पद पंकज । सबके जिन्हहि नमत सिव मुनि अज ॥
मंगन बहु प्रकार पहिराए । द्विजन्ह दान नाना बिधि पाए ॥

दो. ब्रह्मानंद मगन कपि सब के प्रभु पद प्रीति ।
जात न जाने दिवस तिन्ह गए मास षट बीति ॥ १५ ॥

बिसरे गृह सपनेहुँ सुधि नाही । जिमि परद्रोह संत मन माही ॥
तब रघुपति सब सखा बोलाए । आइ सबन्हि सादर सिरु नाए ॥
परम प्रीति समीप बैठारे । भगत सुखद मृदु बचन उचारे ॥
तुम्ह अति कीन्ह मोरि सेवकाई । मुख पर केहि बिधि करौ बड़ाई ॥
ताते मोहि तुम्ह अति प्रिय लागे । मम हित लागि भवन सुख त्यागे ॥
अनुज राज संपति बैदेही । देह गेह परिवार सनेही ॥
सब मम प्रिय नहिं तुम्हहि समाना । मृषा न कहउँ मोर यह बाना ॥
सब के प्रिय सेवक यह नीती । मोरें अधिक दास पर प्रीती ॥

दो. अब गृह जाहु सखा सब भजेहु मोहि दृढ़ नेम ।
सदा सर्वगत सर्वहित जानि करेहु अति प्रेम ॥ १६ ॥

सुनि प्रभु बचन मगन सब भए । को हम कहाँ बिसरि तन गए ॥
 एकटक रहे जोरि कर आगे । सकहिं न कछु कहि अति अनुरागे ॥
 परम प्रेम तिन्ह कर प्रभु देखा । कहा विविध विधि ग्यान बिसेषा ॥
 प्रभु सन्मुख कछु कहन न पारहिं । पुनि पुनि चरन सरोज निहारहिं ॥
 तब प्रभु भूषन बसन मगाए । नाना रंग अनूप सुहाए ॥
 सुग्रीवहिं प्रथमहिं पहिराए । बसन भरत निज हाथ बनाए ॥
 प्रभु प्रेरित लच्छिमन पहिराए । लंकापति रघुपति मन भाए ॥
 अंगद बैठ रहा नहिं डोला । प्रीति देखि प्रभु ताहि न बोला ॥

दो. जामवंत नीलादि सब पहिराए रघुनाथ ।
 हियँ धरि राम रूप सब चले नाइ पद माथ ॥ १७(क) ॥

तब अंगद उठि नाइ सिरु सजल नयन कर जोरि ।
 अति विनीत बोलेउ बचन मनहुँ प्रेम रस बोरि ॥ १७(ख) ॥

सुनु सर्वग्य कृपा सुख सिंधो । दीन दयाकर आरत बंधो ॥
 मरती बेर नाथ मोहि बाली । गयउ तुम्हारेहि कौछें घाली ॥
 असरन सरन बिरदु संभारी । मोहि जनि तजहु भगत हितकारी ॥
 मोरें तुम्ह प्रभु गुर पितु माता । जाउँ कहाँ तजि पद जलजाता ॥
 तुम्हहिं विचारि कहहु नरनाहा । प्रभु तजि भवन काज मम काहा ॥
 बालक ग्यान बुद्धि बल हीना । राखहु सरन नाथ जन दीना ॥
 नीचि टहल गृह कै सब करिहउँ । पद पंकज बिलोकि भव तरिहउँ ॥
 अस कहि चरन परेउ प्रभु पाही । अब जनि नाथ कहहु गृह जाही ॥

दो. अंगद बचन विनीत सुनि रघुपति करुना सीव ।
 प्रभु उठाइ उर लायउ सजल नयन राजीव ॥ १८(क) ॥

निज उर माल बसन मनि बालितनय पहिराइ ।
 विदा कीन्हि भगवान तब बहु प्रकार समुझाइ ॥ १८(ख) ॥

भरत अनुज सौमित्र समेता । पठवन चले भगत कृत चेता ॥
 अंगद हृदयँ प्रेम नहिं थोरा । फिरि फिरि चितव राम की ओरा ॥
 बार बार कर दंड प्रनामा । मन अस रहन कहहिं मोहि रामा ॥
 राम बिलोकनि बोलनि चलनी । सुमिरि सुमिरि सोचत हँसि मिलनी ॥
 प्रभु रुख देखि बिनय बहु भाषी । चलेउ हृदयँ पद पंकज राखी ॥
 अति आदर सब कपि पहुँचाए । भाइन्ह सहित भरत पुनि आए ॥
 तब सुग्रीव चरन गहि नाना । भौंति बिनय कीन्हे हनुमाना ॥
 दिन दस करि रघुपति पद सेवा । पुनि तव चरन देखिहउँ देवा ॥
 पुन्य पुंज तुम्ह पवनकुमारा । सेवहु जाइ कृपा आगारा ॥
 अस कहि कपि सब चले तुरंता । अंगद कहइ सुनहु हनुमंता ॥

दो. कहेहु दंडवत प्रभु सैं तुम्हहिं कहउँ कर जोरि ।
 बार बार रघुनायकहि सुरति कराएहु मोरि ॥ १९(क) ॥
 अस कहि चलेउ बालिसुत फिरि आयउ हनुमंत ।

तासु प्रीति प्रभु सन कहि मगन भए भगवंत ॥ १९(ख) ॥

कुलिसहु चाहि कठोर अति कोमल कुसुमहु चाहि ।
 चित्त खगेस राम कर समुझि परइ कहु काहि ॥ १९(ग) ॥

पुनि कृपाल लियो बोलि निषादा । दीन्हे भूषन बसन प्रसादा ॥
 जाहु भवन मम सुमिरन करेहु । मन क्रम बचन धर्म अनुसरेहु ॥
 तुम्ह मम सखा भरत सम भ्राता । सदा रहेहु पुर आवत जाता ॥
 बचन सुनत उपजा सुख भारी । परेउ चरन भरि लोचन बारी ॥
 चरन नलिन उर धरि गृह आवा । प्रभु सुभाउ परिजनन्हि सुनावा ॥
 रघुपति चरित देखि पुरबासी । पुनि पुनि कहहिं धन्य सुखरासी ॥
 राम राज बैठें त्रेलोका । हरषित भए गए सब सोका ॥
 बयरु न कर काहु सन कोई । राम प्रताप बिषमता खोई ॥

दो. बरनाश्रम निज निज धरम बनिरत बेद पथ लोग ।
 चलहिं सदा पावहिं सुखहिं नहिं भय सोक न रोग ॥ २० ॥

दैहिक दैविक भौतिक तापा । राम राज नहिं काहुहि ब्यापा ॥
 सब नर करहिं परस्पर प्रीती । चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती ॥
 चारिउ चरन धर्म जग माहीं । पूरि रहा सपनेहुँ अध नाहीं ॥
 राम भगति रत नर अरु नारी । सकल परम गति के अधिकारी ॥
 अल्पमृत्यु नहिं कवनिउ पीरा । सब सुंदर सब बिरुज सरीरा ॥
 नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना । नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना ॥
 सब निर्दभ धर्मरत पुनी । नर अरु नारि चतुर सब गुनी ॥
 सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी । सब कृतग्य नहिं कपट सयानी ॥

दो. राम राज नभगेस सुनु सचराचर जग माहिं ॥
 काल कर्म सुभाव गुन कृत दुख काहुहि नाहिं ॥ २१ ॥

भूमि सप्त सागर मेखला । एक भूप रघुपति कोसला ॥
 भुअन अनेक रोम प्रति जासू । यह प्रभुता कछु बहुत न तासू ॥
 सो महिमा समुझत प्रभु केरी । यह बरनत हीनता घनेरी ॥
 सोउ महिमा खगेस जिन्ह जानी । फिरि एहिं चरित तिन्हहुँ रति मानी ॥
 सोउ जाने कर फल यह लीला । कहहिं महा मुनिबर दमसीला ॥
 राम राज कर सुख संपदा । बरनि न सकइ फनीस सारदा ॥
 सब उदार सब पर उपकारी । बिप्र चरन सेवक नर नारी ॥
 एकनारि ब्रत रत सब झारी । ते मन बच क्रम पति हितकारी ॥

दो. दंड जतिन्ह कर भेद जहँ नर्तक नृत्य समाज ।
 जीतहु मनहि सुनिअ अस रामचंद्र के राज ॥ २२ ॥

फूलहिं फरहिं सदा तरु कानन । रहहि एक सँग गज पंचानन ॥
 खग मृग सहज बयरु बिसराई । सबन्हि परस्पर प्रीति बढ़ाई ॥
 कूजहिं खग मृग नाना बृंदा । अभय चरहिं बन करहिं अनंदा ॥
 सीतल सुरभि पवन बह मंदा । गूजत अलि लै चलि मकरंदा ॥
 लता बिटप मागें मधु चवहीं । मनभावतो धेनु पय स्ववहीं ॥

ससि संपन्न सदा रह धरनी । त्रेताँ भइ कृतजुग कै करनी ॥
 प्रगटीं गिरिन्ह बिबिध मनि खानी । जगदातमा भूप जग जानी ॥
 सरिता सकल बहहिं बर बारी । सीतल अमल स्वाद सुखकारी ॥
 सागर निज मरजादाँ रहहीं । डारहिं रत्न तटन्हि नर लहहीं ॥
 सरसिज संकुल सकल तड़ागा । अति प्रसन्न दस दिसा विभागा ॥

दो. बिधु महि पूर मयूखन्हि रबि तप जेतनेहि काज ।
 मागें बारिद देहिं जल रामचंद्र के राज ॥ २३ ॥

कोटिन्ह बाजिमेध प्रभु कीन्हे । दान अनेक द्विजन्ह कहँ दीन्हे ॥
 श्रुति पथ पालक धर्म धुरंधर । गुनातीत अरु भोग पुरंदर ॥
 पति अनुकूल सदा रह सीता । सोभा खानि सुसील विनीता ॥
 जानति कृपासिंधु प्रभुताई । सेवति चरन कमल मन लाई ॥
 जद्यपि गृहँ सेवक सेवकिनी । बिपुल सदा सेवा विधि गुनी ॥
 निज कर गृह परिचरजा करई । रामचंद्र आयसु अनुसरई ॥
 जेहि बिधि कृपासिंधु सुख मानइ । सोइ कर श्री सेवा विधि जानइ ॥
 कौसल्यादि सासु गृह माहीं । सेवइ सबन्हि मान मद नाहीं ॥
 उमा रमा ब्रह्मादि बंदिता । जगदंबा संततमनिदिता ॥

दो. जासु कृपा कटाच्छु सुर चाहत चितव न सोइ ।
 राम पदारविंद रति करति सुभावहि खोइ ॥ २४ ॥

सेवहिं सानकूल सब भाई । राम चरन रति अति अधिकाई ॥
 प्रभु मुख कमल बिलोकत रहहीं । कबहुँ कृपाल हमहि कछु कहहीं ॥
 राम करहिं भ्रातन्ह पर प्रीती । नाना भाँति सिखावहिं नीती ॥
 हरषित रहहिं नगर के लोगा । करहिं सकल सुर दुर्लभ भोगा ॥
 अह्निसि बिधिहि मनावत रहहीं । श्रीरघुबीर चरन रति चहहीं ॥
 दुइ सुत सुन्दर सीताँ जाए । लव कुस बेद पुरानन्ह गाए ॥
 दोउ बिजई विनई गुन मंदिर । हरि प्रतिबिंब मनहुँ अति सुंदर ॥
 दुइ दुइ सुत सब भ्रातन्ह केरे । भए रूप गुन सील घनेरे ॥

दो. ग्यान गिरा गोतीत अज माया मन गुन पार ।
 सोइ सच्चिदानंद घन कर नर चरित उदार ॥ २५ ॥

प्रातकाल सरऊ करि मज्जन । बैठहिं सभाँ संग द्विज सज्जन ॥
 बेद पुरान बसिष्ट बखानहिं । सुनहिं राम जद्यपि सब जानहिं ॥
 अनुजन्ह संजुत भोजन करहीं । देखि सकल जननी सुख भरहीं ॥
 भरत सनुहन दोनउ भाई । सहित पवनसुत उपवन जाई ॥
 बूझहिं बैठि राम गुन गाहा । कह हनुमान सुमति अवगाहा ॥
 सुनत विमल गुन अति सुख पावहिं । बहुरि बहुरि करि विनय कहावहिं ॥
 सब कें गृह गृह होहिं पुराना । रामचरित पावन बिधि नाना ॥
 नर अरु नारि राम गुन गानहिं । करहिं दिवस निसि जात न जानहिं ॥

दो. अवधपुरी वासिन्ह कर सुख संपदा समाज ।
 सहस सेष नहिं कहि सकहिं जहँ नृप राम बिराज ॥ २६ ॥

नारदादि सनकादि मुनीसा । दरसन लागि कोसलाधीसा ॥
 दिन प्रति सकल अजोध्या आवहिं । देखि नगरु बिरागु बिसरावहिं ॥
 जातरूप मनि रचित अटारी । नाना रंग रुचिर गच डारी ॥
 पुर चहुँ पास कोट अति सुंदर । रचे कँगूरा रंग रंग बर ॥
 नव ग्रह निकर अनीक बनाई । जनु घेरी अमरावति आई ॥
 महि बहु रंग रचित गच काँचा । जो बिलोकि मुनिबर मन नाचा ॥
 धवल धाम ऊपर नभ चुंबत । कलस मनहुँ रबि ससि दुति निंदत ॥
 बहु मनि रचित झरोखा भ्राजहिं । गृह गृह प्रति मनि दीप बिराजहिं ॥

छं. मनि दीप राजहिं भवन भ्राजहिं देहरी विद्रुम रची ।
 मनि खंभ भीति बिरंचि बिरची कनक मनि मरकत खची ॥
 सुंदर मनोहर मंदिरायत अजिर रुचिर फटिक रचे ।
 प्रति द्वार द्वार कपाट पुरट बनाइ बहु बज्रन्हि खचे ॥

दो. चारु चित्रसाला गृह गृह प्रति लिखे बनाइ ।
 राम चरित जे निरख मुनि ते मन लेहिं चोराइ ॥ २७ ॥

सुमन बाटिका सबहिं लगाई । बिबिध भाँति करि जतन बनाई ॥
 लता ललित बहु जाति सुहाई । फूलहिं सदा बंसत कि नाई ॥
 गुंजत मधुकर मुखर मनोहर । मारुत त्रिविध सदा बह सुंदर ॥
 नाना खग बालकन्हि जिआए । बोलत मधुर उड़ात सुहाए ॥
 मोर हंस सारस पारावत । भवननि पर सोभा अति पावत ॥
 जहँ तहँ देखहिं निज परिछाहीं । बहु बिधि कूजहिं नृत्य कराहीं ॥
 सुक सारिका पद्मावहिं बालक । कहहु राम रघुपति जनपालक ॥
 राज दुआर सकल बिधि चारू । बीथी चौहट रुचिर बजारू ॥

छं. बाजार रुचिर न बनइ बरनत बस्तु विनु गथ पाइए ।
 जहँ भूप रमानिवास तहँ की संपदा किमि गाइए ॥
 बैठे बजाज सराफ बनिक अनेक मनहुँ कुबेर ते ।
 सब सुखी सब सच्चरित सुंदर नारि नर सिसु जरठ जे ॥

दो. उत्तर दिसि सरजू बह निर्मल जल गंभीर ।
 बाँधे घाट मनोहर स्वल्प पंक नहिं तीर ॥ २८ ॥

दूरि फराक रुचिर सो घाटा । जहँ जल पिअहिं बाजि गज ठाटा ॥
 पनिघट परम मनोहर नाना । तहाँ न पुरुष करहिं अस्नाना ॥
 राजघाट सब बिधि सुंदर बर । मज्जहिं तहाँ बरन चारिउ नर ॥
 तीर तीर देवन्ह के मंदिर । चहुँ दिसि तिन्ह के उपवन सुंदर ॥
 कहुँ कहुँ सरिता तीर उदासी । बसहिं ग्यान रत मुनि संन्यासी ॥
 तीर तीर तुलसिका सुहाई । बंद बंद बहु मुनिन्ह लगाई ॥
 पुर सोभा कछु बरनि न जाई । बाहेर नगर परम रुचिराई ॥
 देखत पुरी अखिल अघ भागा । बन उपवन बापिका तड़ागा ॥

छं. बापी तड़ाग अनूप कूप मनोहरायत सोहहीं ।
 सोपान सुंदर नीर निर्मल देखि सुर मुनि मोहहीं ॥
 बहु रंग कंज अनेक खग कूजहिं मधुप गुंजारहीं ।

आराम रम्य पिकादि खग रव जनु पथिक हंकारहीं ॥

दो. रमानाथ जहँ राजा सो पुर वरनि कि जाइ ।
अनिमादिक सुख संपदा रहीं अवध सब छाड़ि ॥ २९ ॥

जहँ तहँ नर रघुपति गुन गावहिं । बैठि परसपर इहइ सिखावहिं ॥
भजहु प्रनत प्रतिपालक रामहि । सोभा सील रूप गुन धामहि ॥
जलज बिलोचन स्यामल गातहि । पलक नयन इव सेवक त्रातहि ॥
धृत सर रुचिर चाप तूनीरहि । संत कंज बन रवि रनधीरहि ॥
काल कराल ब्याल खगराजहि । नमत राम अकाम ममता जहि ॥
लोभ मोह मृगजूथ किरातहि । मनसिज करि हरि जन सुखदातहि ॥
संसय सोक निबिड़ तम भानुहि । दनुज गहन घन दहन कृसानुहि ॥
जनकसुता समेत रघुवीरहि । कस न भजहु भंजन भव भीरहि ॥
बहु बासना मसक हिम रासिहि । सदा एकरस अज अबिनासिहि ॥
मुनि रंजन भंजन महि भारहि । तुलसिदास के प्रभुहि उदारहि ॥

दो. एहि बिधि नगर नारि नर करहिं राम गुन गान ।
सानुकूल सब पर रहहिं संतत कृपानिधान ॥ ३० ॥

जब ते राम प्रताप खगोसा । उदित भयउ अति प्रबल दिनेसा ॥
पूरि प्रकास रहेउ तिहुँ लोका । बहुतेन्ह सुख बहुतन मन सोका ॥
जिन्हहि सोक ते कहउं बखानी । प्रथम अबिद्या निसा नसानी ॥
अघ उलूक जहँ तहाँ लुकाने । काम क्रोध कैरव सकुचाने ॥
बिबिध कर्म गुन काल सुभाऊ । ए चकोर सुख लहहिं न काऊ ॥
मत्सर मान मोह मद चोरा । इन्ह कर हुनर न कवनिहुँ ओरा ॥
धरम तड़ाग ग्यान बिग्याना । ए पंकज बिकसे बिधि नाना ॥
सुख संतोष विराग बिबेका । बिगत सोक ए कोक अनेका ॥

दो. यह प्रताप रवि जाकें उर जब करइ प्रकास ।
पछिले बाढ़हिं प्रथम जे कहे ते पावहिं नास ॥ ३१ ॥

भ्रातन्ह सहित रामु एक बारा । संग परम प्रिय पवनकुमारा ॥
सुंदर उपवन देखन गए । सब तरु कुसुमित पल्लव नए ॥
जानि समय सनकादिक आए । तेज पुंज गुन सील सुहाए ॥
ब्रह्मानंद सदा लयलीना । देखत बालक बहुकालीना ॥
रूप धरें जनु चारिउ बेदा । समदरसी मुनि बिगत बिभेदा ॥
आसा बसन व्यसन यह तिन्हहीं । रघुपति चरित होइ तहँ सुनहीं ॥
तहाँ रहे सनकादि भवानी । जहँ घटसंभव मुनिबर ग्यानी ॥
राम कथा मुनिबर बहु बरनी । ग्यान जोनि पावक जिमि अरनी ॥

दो. देखि राम मुनि आवत हरषि दंडवत कीन्ह ।
स्वागत पूँछि पीत पट प्रभु बैठन कहँ दीन्ह ॥ ३२ ॥

कीन्ह दंडवत तीनिउँ भाई । सहित पवनसुत सुख अधिकाई ॥
मुनि रघुपति छबि अतुल बिलोकी । भए मगन मन सके न रोकी ॥
स्यामल गात सरोरुह लोचन । सुंदरता मंदिर भव मोचन ॥

एकटक रहे निमेष न लावहिं । प्रभु कर जोरें सीस नवावहिं ॥
तिन्ह कै दसा देखि रघुबीरा । स्ववत नयन जल पुलक सरीरा ॥
कर गहि प्रभु मुनिबर बैठारे । परम मनोहर बचन उचारे ॥
आजु धन्य मैं सुनहु मुनीसा । तुम्हरे दरस जाहिं अघ खीसा ॥
बड़े भाग पाइव सतसंगा । बिनहिं प्रयास होहिं भव भंगा ॥

दो. संत संग अपबर्ग कर कामी भव कर पंथ ।
कहहि संत कवि कोबिद श्रुति पुरान सदग्रंथ ॥ ३३ ॥

सुनि प्रभु बचन हरषि मुनि चारी । पुलकित तन अस्तुति अनुसारी ॥
जय भगवंत अनंत अनामय । अनघ अनेक एक करुनामय ॥
जय निर्गुन जय जय गुन सागर । सुख मंदिर सुंदर अति नागर ॥
जय इंदिरा रमन जय भूधर । अनुपम अज अनादि सोभाकर ॥
ग्यान निधान अमान मानप्रद । पावन सुजस पुरान बेद बद ॥
तग्य कृतग्य अग्यता भंजन । नाम अनेक अनाम निरंजन ॥
सर्व सर्वगत सर्व उरालय । बससि सदा हम कहूँ परिपालय ॥
द्वंद बिपति भव फंद बिभंजय । हृदि बसि राम काम मद गंजय ॥

दो. परमानंद कृपायतन मन परिपूरन काम ।
प्रेम भगति अनपायनी देहु हमहि श्रीराम ॥ ३४ ॥

देहु भगति रघुपति अति पावनि । त्रिविध ताप भव दाप नसावनि ॥
प्रनत काम सुरधेनु कलपतरु । होइ प्रसन्न दीजै प्रभु यह बरु ॥
भव बारिधि कुंभज रघुनायक । सेवत सुलभ सकल सुख दायक ॥
मन संभव दारुन दुख दारय । दीनबंधु समता बिस्तारय ॥
आस त्रास इरिषादि निवारक । बिनय बिबेक बिरति बिस्तारक ॥
भूप मौलि मन मंडन धरनी । देहि भगति संसृति सरि तरनी ॥
मुनि मन मानस हंस निरंतर । चरन कमल बंदित अज संकर ॥
रघुकुल केतु सेतु श्रुति रच्छक । काल करम सुभाउ गुन भच्छक ॥
तारन तरन हरन सब दूषन । तुलसिदास प्रभु त्रिभुवन भूषन ॥

दो. बार बार अस्तुति करि प्रेम सहित सिरु नाइ ।
ब्रह्म भवन सनकादि गे अति अभीष्ट बर पाइ ॥ ३५ ॥

सनकादिक बिधि लोक सिधाए । भ्रातन्ह राम चरन सिरु नाए ॥
पूछत प्रभुहि सकल सकुचाहीं । चितवहिं सब मारुतसुत पाहीं ॥
सुनि चहहिं प्रभु मुख कै बानी । जो सुनि होइ सकल भ्रम हानी ॥
अंतरजामी प्रभु सभ जाना । बूझत कहहु काह हनुमाना ॥
जोरि पानि कह तब हनुमंता । सुनहु दीनदयाल भगवंता ॥
नाथ भरत कछु पूँछन चहहीं । प्रस्न करत मन सकुचत अहहीं ॥
तुम्ह जानहु कपि मोर सुभाऊ । भरतहि मोहि कछु अंतर काऊ ॥
सुनि प्रभु बचन भरत गहे चरना । सुनहु नाथ प्रनतारति हरना ॥

दो. नाथ न मोहि संदेह कछु सपनेहुँ सोक न मोह ।
केवल कृपा तुम्हारिहि कृपानंद संदोह ॥ ३६ ॥

करउँ कृपानिधि एक ढिठाई । मै सेवक तुम्ह जन सुखदाई ॥
 संतन्ह के महिमा रघुराई । बहु बिधि बेद पुरानन्ह गाई ॥
 श्रीमुख तुम्ह पुनि कीन्हि बड़ाई । तिन्ह पर प्रभुहि प्रीति अधिकाई ॥
 सुना चहउँ प्रभु तिन्ह कर लच्छन । कृपासिंधु गुन ग्यान बिचच्छन ॥
 संत असंत भेद बिलगाई । प्रनतपाल मोहि कहहु बुझाई ॥
 संतन्ह के लच्छन सुनु भ्राता । अगनित श्रुति पुरान बिख्याता ॥
 संत असंतन्ह कै असि करनी । जिमि कुठार चंदन आचरनी ॥
 काटइ परसु मलय सुनु भाई । निज गुन देइ सुगंध बसाई ॥

दो. ताते सुर सीसन्ह चढ़त जग बल्लभ श्रीखंड ।
 अनल दाहि पीटत घनहिं परसु बदन यह दंड ॥ ३७ ॥

विषय अलंपट सील गुनाकर । पर दुख दुख सुख सुख देखे पर ॥
 सम अभूतरिपु विमद विरागी । लोभामरष हरष भय त्यागी ॥
 कोमलचित दीनन्ह पर दाया । मन बच क्रम मम भगति अमाया ॥
 सबहि मानप्रद आपु अमानी । भरत प्रान सम मम ते प्रानी ॥
 बिगत काम मम नाम परायन । सांति विरति बिनती मुदितायन ॥
 सीतलता सरलता मयत्री । द्विज पद प्रीति धर्म जनयत्री ॥
 ए सब लच्छन बसहिं जासु उर । जानेहु तात संत संतत फुर ॥
 सम दम नियम नीति नहिं डोलहिं । परुष बचन कबहुं नहिं बोलहिं ॥

दो. निंदा अस्तुति उभय सम ममता मम पद कंज ।
 ते सज्जन मम प्रानप्रिय गुन मंदिर सुख पुंज ॥ ३८ ॥

सनहु असंतन्ह केर सुभाऊ । भूलेहुं संगति करिअ न काऊ ॥
 तिन्ह कर संग सदा दुखदाई । जिमि कलपहि घालइ हरहाई ॥
 खलन्ह हृदयँ अति ताप बिसेषी । जरहिं सदा पर संपति देखी ॥
 जहँ कहँ निंदा सुनहिं पराई । हरषहिं मनहुं परी निधि पाई ॥
 काम क्रोध मद लोभ परायन । निर्दय कपटी कुटिल मलायन ॥
 बयरु अकारन सब काहू सों । जो कर हित अनहित ताहू सों ॥
 झूठइ लेना झूठइ देना । झूठइ भोजन झूठ चबेना ॥
 बोलहिं मधुर बचन जिमि मोरा । खाइ महा अति हृदय कठोरा ॥

दो. पर द्रोही पर दार रत पर धन पर अपबाद ।
 ते नर पाँवर पापमय देह धरें मनुजाद ॥ ३९ ॥

लोभइ ओढ़न लोभइ डासन । सिस्त्रोदर पर जमपुर त्रास न ॥
 काहू की जौ सुनहिं बड़ाई । स्वास लेहिं जनु जूड़ी आई ॥
 जब काहू कै देखहिं बिपती । सुखी भए मानहुं जग नृपती ॥
 स्वारथ रत परिवार विरोधी । लंपट काम लोभ अति क्रोधी ॥
 मातु पिता गुर बिप्र न मानहिं । आपु गए अरु घालहिं आनहिं ॥
 करहिं मोह बस द्रोह परावा । संत संग हरि कथा न भावा ॥
 अवगुन सिंधु मंदमति कामी । बेद बिदूषक परधन स्वामी ॥
 बिप्र द्रोह पर द्रोह बिसेषा । दंभ कपट जियँ धरें सुबेषा ॥

दो. ऐसे अधम मनुज खल कृतजुग त्रेता नाहिं ।

द्वारपर कछुक बृद बहु होइहहिं कलिजुग माहिं ॥ ४० ॥

पर हित सरिस धर्म नहिं भाई । पर पीड़ा सम नहिं अधमाई ॥
 निर्नय सकल पुरान बेद कर । कहेउँ तात जानहिं कोबिद नर ॥
 नर सरीर धरि जे पर पीरा । करहिं ते सहहिं महा भव भीरा ॥
 करहिं मोह बस नर अघ नाना । स्वारथ रत परलोक नसाना ॥
 कालरूप तिन्ह कहँ मै भ्राता । सुभ अरु असुभ कर्म फल दाता ॥
 अस बिचारि जे परम सयाने । भजहिं मोहि संसृत दुख जाने ॥
 त्यागहिं कर्म सुभासुभ दायक । भजहिं मोहि सुर नर मुनि नायक ॥
 संत असंतन्ह के गुन भाषे । ते न परहिं भव जिन्ह लिखि राखे ॥

दो. सुनहु तात माया कृत गुन अरु दोष अनेक ।
 गुन यह उभय न देखिअहिं देखिअ सो अबिवेक ॥ ४१ ॥

श्रीमुख बचन सुनत सब भाई । हरषे प्रेम न हृदयँ समाई ॥
 करहिं बिनय अति बारहिं बारा । हनुमान हियँ हरष अपारा ॥
 पुनि रघुपति निज मंदिर गए । एहि बिधि चरित करत नित नए ॥
 बार बार नारद मुनि आवहिं । चरित पुनीत राम के गावहिं ॥
 नित नव चरन देखि मुनि जाहीं । ब्रह्मलोक सब कथा कहाहीं ॥
 सुनि विरंचि अतिसय सुख मानहिं । पुनि पुनि तात करहु गुन गानहिं ॥
 सनकादिक नारदहि सराहहिं । जद्यपि ब्रह्म निरत मुनि आहहिं ॥
 सुनि गुन गान समाधि बिसारी ॥ सादर सुनहिं परम अधिकारी ॥

दो. जीवनमुक्त ब्रह्मपर चरित सुनहिं तजि ध्यान ।
 जे हरि कथाँ न करहिं रति तिन्ह के हिय पाषान ॥ ४२ ॥

एक बार रघुनाथ बोलाए । गुर द्विज पुरबासी सब आए ॥
 बैठे गुर मुनि अरु द्विज सज्जन । बोले बचन भगत भव भंजन ॥
 सनहु सकल पुरजन मम बानी । कहउँ न कछु ममता उर आनी ॥
 नहिं अनीति नहिं कछु प्रभुताई । सुनहु करहु जो तुम्हहि सोहाई ॥
 सोइ सेवक प्रियतम मम सोई । मम अनुसासन मानै जोई ॥
 जौ अनीति कछु भाषौ भाई । तौ मोहि बरजहु भय बिसराई ॥
 बड़ें भाग मानुष तनु पावा । सुर दुर्लभ सब ग्रंथिन्ह गावा ॥
 साधन धाम मोच्छ कर द्वारा । पाइ न जेहिं परलोक सँवारा ॥

दो. सो परत्र दुख पावइ सिर धुनि धुनि पछिताइ ।
 कालहि कर्महि ईस्वरहि मिथ्या दोष लगाइ ॥ ४३ ॥

एहि तन कर फल विषय न भाई । स्वर्गउ स्वल्प अंत दुखदाई ॥
 नर तनु पाइ विषयँ मन देही । पलटि सुधा ते सठ विष लेही ॥
 ताहि कबहुं भल कहइ न कोई । गुंजा ग्रहइ परस मनि खोई ॥
 आकर चारि लच्छु चौरासी । जोनि भ्रमत यह जिव अबिनासी ॥
 फिरत सदा माया कर प्रेरा । काल कर्म सुभाव गुन घेरा ॥
 कबहुंकर करि करुना नर देही । देत ईस बिनु हेतु सनेही ॥
 नर तनु भव बारिधि कहँ बेरो । सन्मुख मरुत अनुग्रह मेरो ॥
 करनधार सदगुर दृढ़ नावा । दुर्लभ साज सुलभ करि पावा ॥

दो. जो न तरै भव सागर नर समाज अस पाइ ।
सो कृत निंदक मंदमति आत्माहन गति जाइ ॥ ४४ ॥

जौ परलोक इहाँ सुख चहहू । सुनि मम बचन हृदयँ दूढ़ गहहू ॥
सुलभ सुखद मारग यह भाई । भगति मोरि पुरान श्रुति गाई ॥
ग्यान अगम प्रत्यूह अनेका । साधन कठिन न मन कहूँ टेका ॥
करत कष्ट बहु पावइ कोऊ । भक्ति हीन मोहि प्रिय नहिं सोऊ ॥
भक्ति सुतंत्र सकल सुख खानी । बिनु सतसंग न पावहिं प्रानी ॥
पुन्य पुंज बिनु मिलहिं न संता । सतसंगति संसृति कर अंता ॥
पुन्य एक जग महुँ नहिं दूजा । मन क्रम बचन विप्र पद पूजा ॥

सानुकूल तेहि पर मुनि देवा । जो तजि कपटु करइ द्विज सेवा ॥

दो. औरउ एक गुपुत मत सबहि कहउँ कर जोरि ।
संकर भजन बिना नर भगति न पावइ मोरि ॥ ४५ ॥

कहहु भगति पथ कवन प्रयासा । जोग न मख जप तप उपवासा ॥
सरल सुभाव न मन कुटिलाई । जथा लाभ संतोष सदाई ॥
मोर दास कहाइ नर आसा । करइ तौ कहहु कहा बिस्वासा ॥
बहुत कहउँ का कथा बढ़ाई । एहि आचरन बस्य मैं भाई ॥
बैर न बिग्रह आस न त्रासा । सुखमय ताहि सदा सब आसा ॥
अनारंभ अनिकेत अमानी । अनघ अरोष दच्छ विग्यानी ॥
प्रीति सदा सज्जन संसर्गा । तून सम विषय स्वर्ग अपवर्गा ॥
भगति पच्छ हठ नहिं सठताई । दुष्ट तर्क सब दूरि बहाई ॥

दो. मम गुन ग्राम नाम रत गत ममता मद मोह ।
ता कर सुख सोइ जानइ परानंद संदोह ॥ ४६ ॥

सुनत सुधासम बचन राम के । गहे सबनि पद कृपाधाम के ॥
जननि जनक गुर बंधु हमारे । कृपा निधान प्रान ते प्यारे ॥
तनु धनु धाम राम हितकारी । सब विधि तुम्ह प्रनतारति हारी ॥
असि सिख तुम्ह बिनु देइ न कोऊ । मातु पिता स्वारथ रत ओऊ ॥
हेतु रहित जग जुग उपकारी । तुम्ह तुम्हार सेवक असुरारी ॥
स्वारथ मीत सकल जग माहीं । सपनेहुँ प्रभु परमारथ नाहीं ॥
सबके बचन प्रेम रस साने । सुनि रघुनाथ हृदयँ हरषाने ॥
निज निज गृह गए आयसु पाई । बरनत प्रभु बतकही सुहाई ॥

दो. -उमा अवधवासी नर नारि कृतारथ रूप ।
ब्रह्म सच्चिदानंद घन रघुनायक जहँ भूप ॥ ४७ ॥

एक बार बसिष्ठ मुनि आए । जहाँ राम सुखधाम सुहाए ॥
अति आदर रघुनायक कीन्हा । पद पखारि पादोदक लीन्हा ॥
राम सुनहु मुनि कह कर जोरी । कृपासिंधु बिनती कछु मोरी ॥
देखि देखि आचरन तुम्हारा । होत मोह मम हृदयँ अपारा ॥
महिमा अमित वेद नहिं जाना । मैं केहि भाँति कहउँ भगवाना ॥

उपरोहित्य कर्म अति मंदा । वेद पुरान सुमृति कर निंदा ॥
जब न लेउँ मैं तब विधि मोही । कहा लाभ आगें सुत तोही ॥
परमात्मा ब्रह्म नर रूपा । होइहि रघुकुल भूषण भूपा ॥

दो. -तब मैं हृदयँ विचारा जोग जग्य व्रत दान ।
जा कहूँ करिअ सो पैहउँ धर्म न एहि सम आन ॥ ४८ ॥

जप तप नियम जोग निज धर्मा । श्रुति संभव नाना सुभ कर्मा ॥
ग्यान दया दम तीरथ मज्जन । जहँ लगि धर्म कहत श्रुति सज्जन ॥
आगम निगम पुरान अनेका । पढ़े सुने कर फल प्रभु एका ॥
तब पद पंकज प्रीति निरंतर । सब साधन कर यह फल सुंदर ॥
छूटइ मल कि मलहि के धोएँ । घृत कि पाव कोइ बारि बिलोएँ ॥
प्रेम भगति जल बिनु रघुराई । अभिअंतर मल कबहुँ न जाई ॥
सोइ सर्वग्य तग्य सोइ पंडित । सोइ गुन गृह विग्यान अखंडित ॥
दच्छ सकल लच्छन जुत सोई । जाके पद सरोज रति होई ॥

दो. नाथ एक बर मागउँ राम कृपा करि देहु ।
जन्म जन्म प्रभु पद कमल कबहुँ घटै जनि नेहु ॥ ४९ ॥

अस कहि मुनि बसिष्ठ गृह आए । कृपासिंधु के मन अति भाए ॥
हनूमान भरतादिक भ्राता । संग लिए सेवक सुखदाता ॥
पुनि कृपाल पुर बाहेर गए । गज रथ तुरग मगावत भए ॥
देखि कृपा करि सकल सराहे । दिए उचित जिन्ह जिन्ह तेइ चाहे ॥
हरन सकल श्रम प्रभु श्रम पाई । गए जहाँ सीतल अँवराई ॥
भरत दीन्ह निज बसन डसाई । बैठे प्रभु सेवहिं सब भाई ॥
मारुतसुत तब मारुत करई । पुलक बपुष लोचन जल भरई ॥
हनूमान सम नहिं बड़भागी । नहिं कोउ राम चरन अनुरागी ॥
गिरिजा जासु प्रीति सेवकाई । बार बार प्रभु निज मुख गाई ॥

दो. तेहिं अवसर मुनि नारद आए करतल बीन ।
गावन लगे राम कल कीरति सदा नबीन ॥ ५० ॥

मामवलोक्य पंकज लोचन । कृपा बिलोकनि सोच विमोचन ॥
नील तामरस स्याम काम अरि । हृदय कंज मकरंद मधुप हरि ॥
जातुधान बरूथ बल भंजन । मुनि सज्जन रंजन अघ गंजन ॥
भूसुर ससि नव बृंद बलाहक । असरन सरन दीन जन गाहक ॥
भुज बल विपुल भार महि खंडित । खर दूषण विराध बध पंडित ॥
रावनारि सुखरूप भूपबर । जय दसरथ कुल कुमुद सुधाकर ॥
सुजस पुरान बिदित निगमागम । गावत सुर मुनि संत समागम ॥
कारुणीक व्यलीक मद खंडन । सब विधि कुसल कोसला मंडन ॥
कलि मल मथन नाम ममताहन । तुलसीदास प्रभु पाहि प्रनत जन ॥

दो. प्रेम सहित मुनि नारद बरनि राम गुन ग्राम ।
सोभासिंधु हृदयँ धरि गए जहाँ विधि धाम ॥ ५१ ॥

गिरिजा सुनहु बिसद यह कथा । मैं सब कही मोरि मति जथा ॥

राम चरित सत कोटि अपारा । श्रुति सारदा न बरनै पारा ॥
 राम अनंत अनंत गुनानी । जन्म कर्म अनंत नामानी ॥
 जल सीकर महि रज गनि जाहीं । रघुपति चरित न बरनि सिराहीं ॥
 बिमल कथा हरि पद दायनी । भगति होइ सुनि अनपायनी ॥
 उमा कहिउँ सब कथा सुहाई । जो भुसुंडि खगपतिहि सुनाई ॥
 कछुक राम गुन कहेउँ बखानी । अब का कहौं सो कहहु भवानी ॥
 सुनि सुभ कथा उमा हरषानी । बोली अति विनीत मृदु बानी ॥
 धन्य धन्य मैं धन्य पुरारी । सुनेउँ राम गुन भव भय हारी ॥

दो. तुम्हरी कृपाँ कृपायतन अब कृतकृत्य न मोह ।
 जानेउँ राम प्रताप प्रभु चिदानंद संदोह ॥ ५२(क) ॥

नाथ तवानन ससि स्रवत कथा सुधा रघुबीर ।
 श्रवन पुटन्हि मन पान करि नहिं अघात मतिधीर ॥ ५२(ख) ॥

राम चरित जे सुनत अघाहीं । रस बिसेष जाना तिन्ह नाहीं ॥
 जीवनमुक्त महामुनि जेऊ । हरि गुन सुनहीं निरंतर तेऊ ॥
 भव सागर चह पार जो पावा । राम कथा ता कहँ दृढ नावा ॥
 विषइन्ह कहँ पुनि हरि गुन ग्रामा । श्रवन सुखद अरु मन अभिरामा ॥
 श्रवनवंत अस को जग माहीं । जाहि न रघुपति चरित सोहाहीं ॥
 ते जड़ जीव निजात्मक घाती । जिन्हहि न रघुपति कथा सोहाती ॥
 हरिचरित्र मानस तुम्ह गावा । सुनि मैं नाथ अमिति सुख पावा ॥
 तुम्ह जो कही यह कथा सुहाई । कागभसुंडि गरुड़ प्रति गाई ॥

दो. बिरति ग्यान विग्यान दृढ राम चरन अति नेह ।
 बायस तन रघुपति भगति मोहि परम संदेह ॥ ५३ ॥

नर सहस्त्र महँ सुनहु पुरारी । कोउ एक होइ धर्म व्रतधारी ॥
 धर्मसील कोटिक महँ कोई । विषय विमुख विराग रत होई ॥
 कोटि बिरक्त मध्य श्रुति कहई । सम्यक ग्यान सकृत कोउ लहई ॥
 ग्यानवंत कोटिक महँ कोऊ । जीवनमुक्त सकृत जग सोऊ ॥
 तिन्ह सहस्त्र महँ सब सुख खानी । दुर्लभ ब्रह्मलीन विग्यानी ॥
 धर्मसील बिरक्त अरु ग्यानी । जीवनमुक्त ब्रह्मपर प्राणी ॥
 सब ते सो दुर्लभ सुरराया । राम भगति रत गत मद माया ॥
 सो हरिभगति काग किमि पाई । बिस्वनाथ मोहि कहहु बुझाई ॥

दो. राम परायन ग्यान रत गुनागार मति धीर ।
 नाथ कहहु केहि कारन पायउ काक सररीर ॥ ५४ ॥

यह प्रभु चरित पवित्र सुहावा । कहहु कृपाल काग कहँ पावा ॥
 तुम्ह केहि भाँति सुना मदनारी । कहहु मोहि अति कौतुक भारी ॥
 गरुड़ महाग्यानी गुन रासी । हरि सेवक अति निकट निवासी ॥
 तेहिं केहि हेतु काग सन जाई । सुनी कथा मुनि निकर बिहाई ॥
 कहहु कवन विधि भा संबादा । दोउ हरिभगत काग उरगादा ॥
 गौरि गिरा सुनि सरल सुहाई । बोले सिव सादर सुख पाई ॥
 धन्य सती पावन मति तोरी । रघुपति चरन प्रीति नहिं थोरी ॥

सुनहु परम पुनीत इतिहासा । जो सुनि सकल लोक भ्रम नासा ॥
 उपजइ राम चरन बिस्वासा । भव निधि तर नर बिनहिं प्रयासा ॥

दो. ऐसिअ प्रस्न बिहंगपति कीन्ह काग सन जाइ ।
 सो सब सादर कहिहउँ सुनहु उमा मन लाइ ॥ ५५ ॥

मैं जिमि कथा सुनी भव मोचनि । सो प्रसंग सुनु सुमुखि सुलोचनि ॥
 प्रथम दच्छ गृह तव अवतारा । सती नाम तब रहा तुम्हारा ॥
 दच्छ जग्य तव भा अपमाना । तुम्ह अति क्रोध तजे तब प्राणा ॥
 मम अनुचरन्ह कीन्ह मख भंगा । जानहु तुम्ह सो सकल प्रसंगा ॥
 तब अति सोच भयउ मन मोरें । दुखी भयउँ बियोग प्रिय तोरें ॥
 सुंदर बन गिरि सरित तड़ागा । कौतुक देखत फिरउँ बेरागा ॥
 गिरि सुमेर उत्तर दिसि दूरी । नील सैल एक सुन्दर भूरी ॥
 तासु कनकमय सिखर सुहाए । चारि चारु मोरे मन भाए ॥
 तिन्ह पर एक एक बिटप बिसाला । बट पीपर पाकरी रसाला ॥
 सैलोपरि सर सुंदर सोहा । मनि सोपान देखि मन मोहा ॥

दो. -सीतल अमल मधुर जल जलज बिपुल बहुरंग ।
 कूजत कल रव हंस गन गुंजत मजुंल भृंग ॥ ५६ ॥

तेहिं गिरि रुचिर बसइ खग सोई । तासु नास कल्पांत न होई ॥
 माया कृत गुन दोष अनेका । मोह मनोज आदि अबिबेका ॥
 रहे ब्यापि समस्त जग माहीं । तेहि गिरि निकट कबहुँ नहिं जाहीं ॥
 तहँ बसि हरिहि भजइ जिमि कागा । सो सुनु उमा सहित अनुरागा ॥
 पीपर तरु तर ध्यान सो धरई । जाप जग्य पाकरि तर करई ॥
 आँब छाहँ कर मानस पूजा । तजि हरि भजनु काजु नहिं दूजा ॥
 बर तर कह हरि कथा प्रसंगा । आवहिं सुनहिं अनेक बिहंगा ॥
 राम चरित विचीत्र विधि नाना । प्रेम सहित कर सादर गाना ॥
 सुनहिं सकल मति बिमल मराला । बसहिं निरंतर जे तेहिं ताला ॥
 जब मैं जाइ सो कौतुक देखा । उर उपजा आनंद बिसेषा ॥

दो. तब कछु काल मराल तनु धरि तहँ कीन्ह निवास ।
 सादर सुनि रघुपति गुन पुनि आयउँ कैलास ॥ ५७ ॥

गिरिजा कहेउँ सो सब इतिहासा । मैं जेहि समय गयउँ खग पासा ॥
 अब सो कथा सुनहु जेही हेतू । गयउ काग पहिं खग कुल केतू ॥
 जब रघुनाथ कीन्ह रन क्रीड़ा । समुझत चरित होति मोहि ब्रीड़ा ॥
 इंद्रजीत कर आपु बंधायो । तब नारद मुनि गरुड़ पठायो ॥
 बंधन काटि गयो उरगादा । उपजा हृदय प्रचंड विषादा ॥
 प्रभु बंधन समुझत बहु भाँती । करत बिचार उरग आराती ॥
 व्यापक ब्रह्म बिरज बागीसा । माया मोह पार परमीसा ॥
 सो अवतार सुनेउँ जग माहीं । देखेउँ सो प्रभाव कछु नाहीं ॥

दो. -भव बंधन ते छूटहिं नर जपि जा कर नाम ।
 खर्च निसाचर बाँधेउ नागपास सोइ राम ॥ ५८ ॥

नाना भाँति मनहि समुझावा । प्रगट न ग्यान हृदयँ भ्रम छावा ॥
खेद खिन्न मन तर्क बढ़ाई । भयउ मोहबस तुम्हरिहिं नाई ॥
ब्याकुल गयउ देवरिषि पाहीं । कहेसि जो संसय निज मन माहीं ॥
सुनि नारदहि लागि अति दाया । सुनु खग प्रबल राम कै माया ॥
जो ग्यानिन्ह कर चित अपहरई । बरिआई विमोह मन करई ॥
जेहिं बहु बार नचावा मोही । सोइ ब्यापी विहंगपति तोही ॥
महामोह उपजा उर तोरें । मिटिहि न बेगि कहें खग मोरें ॥
चतुरानन पहिं जाहु खगेसा । सोइ करेहु जेहि होइ निदेसा ॥

दो. अस कहि चले देवरिषि करत राम गुन गान ।
हरि माया बल बरनत पुनि पुनि परम सुजान ॥ ५९ ॥

तब खगपति विरंचि पहिं गयऊ । निज संदेह सुनावत भयऊ ॥
सुनि विरंचि रामहि सिरु नावा । समुझि प्रताप प्रेम अति छावा ॥
मन महुँ करइ विचार विधाता । माया बस कबि कोविद ग्याता ॥
हरि माया कर अमिति प्रभावा । विपुल बार जेहिं मोहि नचावा ॥
अग जगमय जग मम उपराजा । नहिं आचरज मोह खगराजा ॥
तब बोले विधि गिरा सुहाई । जान महेस राम प्रभुताई ॥
बैनतेय संकर पहिं जाहू । तात अनत पूछहु जनि काहू ॥
तहँ होइहि तव संसय हानी । चलेउ विहंग सुनत विधि बानी ॥

दो. परमातुर विहंगपति आयउ तब मो पास ।
जात रहेउँ कुबेर गृह रहिहु उमा कैलास ॥ ६० ॥

तेहिं मम पद सादर सिरु नावा । पुनि आपन संदेह सुनावा ॥
सुनि ता करि बिनती मृदु बानी । परेम सहित मै कहेउँ भवानी ॥
मिलेहु गरुड़ मारग महुँ मोही । कवन भाँति समुझावौ तोही ॥
तबहि होइ सब संसय भंगा । जब बहु काल करिअ सतसंगा ॥
सुनिअ तहाँ हरि कथा सुहाई । नाना भाँति मुनिन्ह जो गाई ॥
जेहि महुँ आदि मध्य अवसाना । प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवाना ॥
नित हरि कथा होत जहँ भाई । पठवउँ तहाँ सुनिहि तुम्ह जाई ॥
जाइहि सुनत सकल संदेहा । राम चरन होइहि अति नेहा ॥

दो. बिनु सतसंग न हरि कथा तेहि बिनु मोह न भाग ।
मोह गएँ बिनु राम पद होइ न दृढ़ अनुराग ॥ ६१ ॥

मिलहिं न रघुपति बिनु अनुरागा । किऐं जोग तप ग्यान विरागा ॥
उत्तर दिसि सुंदर गिरि नीला । तहँ रह काकभुसुंडि सुसीला ॥
राम भगति पथ परम प्रबीना । ग्यानी गुन गृह बहु कालीना ॥
राम कथा सो कहइ निरंतर । सादर सुनिहिं विविध विहंगबर ॥
जाइ सुनहु तहँ हरि गुन भूरी । होइहि मोह जनित दुख दूरी ॥
मैं जब तेहि सब कहा बुझाई । चलेउ हरिषि मम पद सिरु नाई ॥
ताते उमा न मैं समुझावा । रघुपति कृपाँ मरमु मैं पावा ॥
होइहि कीन्ह कबहुँ अभिमाना । सो खौवै चह कृपानिधाना ॥
कछु तेहि ते पुनि मैं नहिं राखा । समुझइ खग खगही कै भाषा ॥
प्रभु माया बलवंत भवानी । जाहि न मोह कवन अस ग्यानी ॥

दो. ग्यानि भगत सिरोमनि त्रिभुवनपति कर जान ।
ताहि मोह माया नर पावर करहिं गुमान ॥ ६२(क) ॥

मासपारायण, अट्टाईसवाँ विश्राम
सिव विरंचि कहुँ मोहइ को है बपुरा आन ।
अस जियँ जानि भजहिं मुनि माया पति भगवान ॥ ६२(ख) ॥

गयउ गरुड़ जहँ बसइ भुसुंडा । मति अकुंठ हरि भगति अखंडा ॥
देखि सैल प्रसन्न मन भयऊ । माया मोह सोच सब गयऊ ॥
करि तड़ाग मज्जन जलपाना । बट तर गयउ हृदयँ हरषाना ॥
बृद्ध बृद्ध विहंग तहँ आए । सुनै राम के चरित सुहाए ॥
कथा अरंभ करै सोइ चाहा । तेही समय गयउ खगनाहा ॥
आवत देखि सकल खगराजा । हरषेउ बायस सहित समाजा ॥
अति आदर खगपति कर कीन्हा । स्वागत पूछि सुआसन दीन्हा ॥
करि पूजा समेत अनुरागा । मधुर बचन तब बोलेउ कागा ॥

दो. नाथ कृतारथ भयउँ मैं तव दरसन खगराज ।
आयसु देहु सो करौ अब प्रभु आयहु केहि काज ॥ ६३(क) ॥

सदा कृतारथ रूप तुम्ह कह मृदु बचन खगेस ।
जेहि कै अस्तुति सादर निज मुख कीन्हि महेस ॥ ६३(ख) ॥

सुनहु तात जेहि कारन आयउँ । सो सब भयउ दरस तव पायउँ ॥
देखि परम पावन तव आश्रम । गयउ मोह संसय नाना भ्रम ॥
अब श्रीराम कथा अति पावनि । सदा सुखद दुख पुंज नसावनि ॥
सादर तात सुनावहु मोही । बार बार बिनवउँ प्रभु तोही ॥
सुनत गरुड़ कै गिरा विनीता । सरल सुप्रेम सुखद सुपुनीता ॥
भयउ तासु मन परम उछाहा । लाग कहै रघुपति गुन गाहा ॥
प्रथमहिं अति अनुराग भवानी । रामचरित सर कहेसि बखानी ॥
पुनि नारद कर मोह अपारा । कहेसि बहुरि रावन अवतारा ॥
प्रभु अवतार कथा पुनि गाई । तब सिसु चरित कहेसि मन लाई ॥

दो. बालचरित कहिं विविध विधि मन महुँ परम उछाहा ।
रिषि आगवन कहेसि पुनि श्री रघुबीर बिबाह ॥ ६४ ॥

बहुरि राम अभिषेक प्रसंगा । पुनि नृप बचन राज रस भंगा ॥
पुरवासिन्ह कर बिरह बिषादा । कहेसि राम लच्छिमन संबादा ॥
बिपिन गवन केवट अनुरागा । सुरसरि उतरि निवास प्रयागा ॥
बालमीक प्रभु मिलन बखाना । चित्रकूट जिमि बसे भगवाना ॥
सचिवागवन नगर नृप मरना । भरतागवन प्रेम बहु बरना ॥
करि नृप क्रिया संग पुरबासी । भरत गए जहँ प्रभु सुख रासी ॥
पुनि रघुपति बहु विधि समुझाए । लै पादुका अवधपुर आए ॥
भरत रहनि सुरपति सुत करनी । प्रभु अरु अत्रि भेंट पुनि बरनी ॥

दो. कहि बिराध बध जेहि विधि देह तजी सरभंग ॥

बरनि सुतीछन प्रीति पुनि प्रभु अगस्ति सतसंग ॥ ६५ ॥

कहि दंडक बन पावनताई। गीध मइत्री पुनि तेहिं गाई ॥
पुनि प्रभु पंचवटी कृत बासा। भंजी सकल मुनिन्ह की त्रासा ॥
पुनि लछिमन उपदेस अनूपा। सूपनखा जिमि कीन्हि कुरूपा ॥
खर दूषन बध बहुरि बखाना। जिमि सब मरमु दसानन जाना ॥
दसकंधर मारीच बतकहीं। जेहि बिधि भई सो सब तेहिं कही ॥
पुनि माया सीता कर हरना। श्रीरघुबीर बिरह कछु बरना ॥
पुनि प्रभु गीध क्रिया जिमि कीन्हि। बधि कबंध सबरिहि गति दीन्हि ॥
बहुरि बिरह बरनत रघुबीरा। जेहि बिधि गए सरोबर तीरा ॥

दो. प्रभु नारद संवाद कहि मारुति मिलन प्रसंग।
पुनि सुग्रीव मित्ताई बालि प्रान कर भंग ॥ ६६((क) ॥

कपिहि तिलक करि प्रभु कृत सैल प्रवरषन बास।
बरनन वर्षा सरद अरु राम रोष कपि त्रास ॥ ६६(ख) ॥

जेहि बिधि कपिपति कीस पठाए। सीता खोज सकल दिसि धाए ॥
बिबर प्रबेस कीन्ह जेहि भाँती। कपिन्ह बहोरि मिला संपाती ॥
सुनि सब कथा समीरकुमारा। नाघत भयउ पयोधि अपारा ॥
लंकाँ कपि प्रबेस जिमि कीन्हि। पुनि सीतहि धीरजु जिमि दीन्हि ॥
बन उजारि रावनहि प्रबोधी। पुर दहि नाघेउ बहुरि पयोधी ॥
आए कपि सब जहँ रघुराई। बैदेही कि कुसल सुनाई ॥
सेन समेति जथा रघुबीरा। उतरे जाइ बारिनिधि तीरा ॥
मिला बिभीषण जेहि बिधि आई। सागर निग्रह कथा सुनाई ॥

दो. सेतु बाँधि कपि सेन जिमि उतरी सागर पार।
गयउ बसीठी बीरवर जेहि बिधि बालिकुमार ॥ ६७(क) ॥

निसिचर कीस लराई बरनिसि बिबिध प्रकार।
कुंभकरन घननाद कर बल पौरुष संघार ॥ ६७(ख) ॥

निसिचर निकर मरन बिधि नाना। रघुपति रावन समर बखाना ॥
रावन बध मंदोदरि सोका। राज बिभीषण देव असोका ॥
सीता रघुपति मिलन बहोरी। सुरन्ह कीन्ह अस्तुति कर जोरी ॥
पुनि पुष्पक चढ़ि कपिन्ह समेता। अवध चले प्रभु कृपा निकेता ॥
जेहि बिधि राम नगर निज आए। बायस बिसद चरित सब गाए ॥
कहेसि बहोरि राम अभिषैका। पुर बरनत नृपनीति अनेका ॥
कथा समस्त भुसुंड बखानी। जो मैं तुम्ह सन कही भवानी ॥
सुनि सब राम कथा खगनाहा। कहत बचन मन परम उछाहा ॥

सो. गयउ मोर संदेह सुनेउँ सकल रघुपति चरित।
भयउ राम पद नेह तव प्रसाद बायस तिलक ॥ ६८(क) ॥

मोहि भयउ अति मोह प्रभु बंधन रन महुँ निरखि।
चिदानंद संदोह राम बिकल कारन कवन। ६८(ख) ॥

देखि चरित अति नर अनुसारी। भयउ हृदयँ मम संसय भारी ॥
सोइ भ्रम अब हित करि मैं माना। कीन्ह अनुग्रह कृपानिधाना ॥
जो अति आतप ब्याकुल होई। तरु छाया सुख जानइ सोई ॥
जौ नहिं होत मोह अति मोही। मिलतेउँ तात कवन बिधि तोही ॥
सुनतेउँ किमि हरि कथा सुहाई। अति बिचित्र बहु बिधि तुम्ह गाई ॥
निगमागम पुरान मत एहा। कहहिं सिद्ध मुनि नहिं संदेहा ॥
संत बिसुद्ध मिलहिं परि तेही। चितवहिं राम कृपा करि जेही ॥
राम कृपाँ तव दरसन भयऊ। तव प्रसाद सब संसय गयऊ ॥

दो. सुनि बिहंगपति बानी सहित बिनय अनुराग।
पुलक गात लोचन सजल मन हरषेउ अति काग ॥ ६९(क) ॥

श्रोता सुमति सुसील सुचि कथा रसिक हरि दास।
पाइ उमा अति गोप्यमपि सज्जन करहिं प्रकास ॥ ६९(ख) ॥

बोलेउ काकभसुंड बहोरी। नभग नाथ पर प्रीति न थोरी ॥
सब बिधि नाथ पूज्य तुम्ह मेरे। कृपापात्र रघुनायक केरे ॥
तुम्हहि न संसय मोह न माया। मो पर नाथ कीन्ह तुम्ह दाया ॥
पठइ मोह मिस खगपति तोही। रघुपति दीन्हि बड़ाई मोही ॥
तुम्ह निज मोह कही खग साई। सो नहिं कछु आचरज गोसाई ॥
नारद भव बिरचि सनकादी। जे मुनिनायक आतमवादी ॥
मोह न अंध कीन्ह केहि केही। को जग काम नचाव न जेही ॥
तृष्णाँ केहि न कीन्ह बौराहा। केहि कर हृदय क्रोध नहिं दाहा ॥

दो. ग्यानी तापस सूर कवि कोविद गुन आगार।
केहि कै लौभ बिडंबना कीन्हि न एहिं संसार ॥ ७०(क) ॥

श्री मद बक्र न कीन्ह केहि प्रभुता बधिर न काहि।
मृगलोचनि के नैन सर को अस लाग न जाहि ॥ ७०(ख) ॥

गुन कृत सन्यपात नहिं केही। कोउ न मान मद तजेउ निबेही ॥
जोबन ज्वर केहि नहिं बलकावा। ममता केहि कर जस न नसावा ॥
मच्छर काहि कलंक न लावा। काहि न सोक समीर डोलावा ॥
चिंता साँपिनि को नहिं खाया। को जग जाहि न ब्यापी माया ॥
कीट मनोरथ दारु सरीरा। जेहि न लाग घुन को अस धीरा ॥
सुत बित लोक ईषना तीनी। केहि के मति इन्ह कृत न मलीनी ॥
यह सब माया कर परिवारा। प्रबल अमिति को बरनै पारा ॥
सिव चतुरानन जाहि डेराहीं। अपर जीव केहि लेखे माहीं ॥

दो. ब्यापि रहेउ संसार महुँ माया कटक प्रचंड ॥
सेनापति कामादि भट दंभ कपट पाषंड ॥ ७१(क) ॥

सो दासी रघुबीर के समुझे मिथ्या सोपि।
छूट न राम कृपा विनु नाथ कहउँ पद रोपि ॥ ७१(ख) ॥

जो माया सब जगहि नचावा । जासु चरित लखि काहुँ न पावा ॥
 सोइ प्रभु भू बिलास खगराजा । नाच नटी इव सहित समाजा ॥
 सोइ सच्चिदानंद घन रामा । अज विग्यान रूपो बल धामा ॥
 ब्यापक ब्याप्य अखंड अनंता । अखिल अमोघसक्ति भगवंता ॥
 अगुन अदभ्र गिरा गोतीता । सबदरसी अनवद्य अजीता ॥
 निर्मम निराकार निरमोहा । नित्य निरंजन सुख संदोहा ॥
 प्रकृति पार प्रभु सब उर बासी । ब्रह्म निरीह बिरज अबिनासी ॥
 इहाँ मोह कर कारन नाही । रवि सन्मुख तम कबहुँ कि जाहीं ॥

दो. भगत हेतु भगवान प्रभु राम धरेउ तनु भूप ।
 किए चरित पावन परम प्राकृत नर अनुरूप ॥ ७२(क) ॥

जथा अनेक बेष धरि नृत्य करइ नट कोइ ।
 सोइ सोइ भाव देखावइ आपुन होइ न सोइ ॥ ७२(ख) ॥

असि रघुपति लीला उरगारी । दनुज विमोहनि जन सुखकारी ॥
 जे मति मलिन बिषयबस कामी । प्रभु मोह धरहिं इमि स्वामी ॥
 नयन दोष जा कहँ जब होई । पीत बरन ससि कहँ कह सोई ॥
 जब जेहि दिसि भ्रम होइ खगेसा । सो कह पच्छिम उयउ दिनेसा ॥
 नौकारूढ चलत जग देखा । अचल मोह बस आपुहि लेखा ॥
 बालक भ्रमहिं न भ्रमहिं गृहादी । कहहिं परस्पर मिथ्याबादी ॥
 हरि बिषइक अस मोह बिहंगा । सपनेहुँ नहिं अग्यान प्रसंगा ॥
 मायाबस मतिमंद अभागी । हृदयँ जमनिका बहुबिधि लागी ॥
 ते सठ हठ बस संसय करहीं । निज अग्यान राम पर धरहीं ॥

दो. काम क्रोध मद लोभ रत गृहासक्त दुखरूप ।
 ते किमि जानहिं रघुपतिहि मूढ़ परे तम कूप ॥ ७३(क) ॥

निर्गुन रूप सुलभ अति सगुन जान नहिं कोइ ।
 सुगम अगम नाना चरित सुनि मुनि मन भ्रम होइ ॥ ७३(ख) ॥

सुनु खगेस रघुपति प्रभुताई । कहउँ जथामति कथा सुहाई ॥
 जेहि बिधि मोह भयउ प्रभु मोही । सोउ सब कथा सुनावउँ तोही ॥
 राम कृपा भाजन तुम्ह ताता । हरि गुन प्रीति मोहि सुखदाता ॥
 ताते नहिं कछु तुम्हहिं दुरावउँ । परम रहस्य मनोहर गावउँ ॥
 सुनहु राम कर सहज सुभाऊ । जन अभिमान न राखहिं काऊ ॥
 संसृत मूल सूलप्रद नाना । सकल सोक दायक अभिमाना ॥
 ताते करहिं कृपानिधि दूरी । सेवक पर ममता अति भूरी ॥
 जिमि सिसु तन ब्रन होइ गोसाई । मातु चिराव कठिन की नाई ॥

दो. जदपि प्रथम दुख पावइ रोवइ बाल अधीर ।
 व्याधि नास हित जननी गनति न सो सिसु पीर ॥ ७४(क) ॥

तिमि रघुपति निज दासकर हरहिं मान हित लागि ।
 तुलसिदास ऐसे प्रभुहि कस न भजहु भ्रम त्यागि ॥ ७४(ख) ॥

राम कृपा आपनि जड़ताई । कहउँ खगेस सुनहु मन लाई ॥
 जब जब राम मनुज तनु धरहीं । भक्त हेतु लील बहू करहीं ॥
 तब तब अवधपुरी में जाऊँ । बालचरित बिलोकि हरषाऊँ ॥
 जन्म महोत्सव देखउँ जाई । बरष पाँच तहँ रहउँ लोभाई ॥
 इष्टदेव मम बालक रामा । सोभा बपुष कोटि सत कामा ॥
 निज प्रभु बदन निहारि निहारी । लोचन सुफल करउँ उरगारी ॥
 लघु बायस बपु धरि हरि संगी । देखउँ बालचरित बहुरंगा ॥

दो. लरिकाई जहँ जहँ फिरहिं तहँ तहँ संग उड़ाउँ ।
 जूठनि परइ अजिर महँ सो उठाइ करि खाउँ ॥ ७५(क) ॥

एक बार अतिसय सब चरित किए रघुवीर ।
 सुमिरत प्रभु लीला सोइ पुलकित भयउ सरीर ॥ ७५(ख) ॥

कहइ भसुंड सुनहु खगनायक । रामचरित सेवक सुखदायक ॥
 नृपमंदिर सुंदर सब भाँती । खचित कनक मनि नाना जाती ॥
 बरनि न जाइ रुचिर अँगनाई । जहँ खेलहिं नित चारिउ भाई ॥
 बालबिनोद करत रघुराई । बिचरत अजिर जननि सुखदाई ॥
 मरकत मृदुल कलेवर स्यामा । अंग अंग प्रति छबि बहु कामा ॥
 नव राजीव अरुन मृदु चरना । पदज रुचिर नख ससि दुति हरना ॥
 ललित अंक कुलिसादिक चारी । नूपुर चारू मधुर रवकारी ॥
 चारु पुरट मनि रचित बनाई । कटि किंकिन कल मुखर सुहाई ॥

दो. रेखा त्रय सुन्दर उदर नामी रुचिर गँभीर ।
 उर आयत भ्राजत विविध बाल विभूषन चीर ॥ ७६ ॥

अरुन पानि नख करज मनोहर । बाहु बिसाल विभूषन सुंदर ॥
 कंध बाल केहरि दर ग्रीवा । चारु चिबुक आनन छबि सींवा ॥
 कलबल बचन अधर अरुनारे । दुइ दुइ दसन विसद बर बारे ॥
 ललित कपोल मनोहर नासा । सकल सुखद ससि कर सम हासा ॥
 नील कंज लोचन भव मोचन । भ्राजत भाल तिलक गोरुचन ॥
 विकट भूकुटि सम श्रवन सुहाए । कुंचित कच मेचक छबि छाए ॥
 पीत झीनि झगुली तन सोही । किलकनि चितवनि भावति मोही ॥
 रूप रासि नृप अजिर बिहारी । नाचहिं निज प्रतिबिंब निहारी ॥
 मोहि सन करहीं विविध विधि क्रीड़ा । बरनत मोहि होति अति ब्रीड़ा ॥
 किलकत मोहि धरन जब धावहिं । चलउँ भागि तब पूष देखावहिं ॥

दो. आवत निकट हँसहिं प्रभु भाजत रुदन कराहिं ।
 जाउँ समीप गहन पद फिरि फिरि चितइ पराहिं ॥ ७७(क) ॥

प्राकृत सिसु इव लीला देखि भयउ मोहि मोह ।
 कवन चरित्र करत प्रभु चिदानंद संदोह ॥ ७७(ख) ॥

एतना मन आनत खगराया । रघुपति प्रेरित ब्यापी माया ॥
 सो माया न दुखद मोहि काहीं । आन जीव इव संसृत नाही ॥
 नाथ इहाँ कछु कारन आना । सुनहु सो सावधान हरिजाना ॥

ग्यान अखंड एक सीताबर । माया बस्य जीव सचराचर ॥
जौ सब के रह ग्यान एकरस । ईस्वर जीवहि भेद कहहु कस ॥
माया बस्य जीव अभिमानी । ईस बस्य माया गुनखानी ॥
परबस जीव स्वबस भगवंता । जीव अनेक एक श्रीकंता ॥
मुधा भेद जद्यपि कृत माया । विनु हरि जाइ न कोटि उपाया ॥

दो. रामचंद्र के भजन विनु जो चह पद निर्बान ।
ग्यानवंत अपि सो नर पसु विनु पूँछ विषान ॥ ७८(क) ॥

राकापति षोडस उअहिं तारागन समुदाइ ॥
सकल गिरिन्ह दव लाइअ विनु रवि राति न जाइ ॥ ७८(ख) ॥

ऐसेहिं हरि विनु भजन खगेसा । मिटइ न जीवन्ह केर कलेसा ॥
हरि सेवकहि न ब्याप अबिद्या । प्रभु प्रेरित ब्यापइ तेहि बिद्या ॥
ताते नास न होइ दास कर । भेद भगति भाइइ बिहंगबर ॥
भ्रम ते चकित राम मोहि देखा । बिहँसे सो सुनु चरित बिसेषा ॥
तेहि कौतुक कर मरमु न काहँ । जाना अनुज न मातु पिताहँ ॥
जानु पानि धाए मोहि धरना । स्यामल गात अरुन कर चरना ॥
तब मैं भागि चलेउँ उरगामी । राम गहन कहँ भुजा पसारी ॥
जिमि जिमि दूरि उड़ाउँ अकासा । तहँ भुज हरि देखेउँ निज पासा ॥

दो. ब्रह्मलोक लागि गयउँ मैं चितयउँ पाछ उड़ात ।
जुग अंगुल कर बीच सब राम भुजहि मोहि तात ॥ ७९(क) ॥

सप्ताबरन भेद करि जहाँ लगें गति मोरि ।
गयउँ तहाँ प्रभु भुज निरखि ब्याकुल भयउँ बहोरि ॥ ७९(ख) ॥

मूदेउँ नयन त्रसित जब भयउँ । पुनि चितवत कोसलपुर गयऊँ ॥
मोहि बिलोकि राम मुसुकाहीं । बिहँसत तुरत गयउँ मुख माहीं ॥
उदर माझ सुनु अंडज राया । देखेउँ बहु ब्रह्मांड निकाया ॥
अति बिचित्र तहँ लोक अनेका । रचना अधिक एक ते एका ॥
कोटिन्ह चतुरानन गौरीसा । अगनित उडगन रवि रजनीसा ॥
अगनित लोकपाल जम काला । अगनित भूधर भूमि बिसाला ॥
सागर सरि सर बिपिन अपारा । नाना भाँति सृष्टि बिस्तारा ॥
सुर मुनि सिद्ध नाग नर किंनर । चारि प्रकार जीव सचराचर ॥

दो. जो नहिं देखा नहिं सुना जो मनहूँ न समाइ ।
सो सब अडुत देखेउँ बरनि कवनि बिधि जाइ ॥ ८०(क) ॥

एक एक ब्रह्मांड महुँ रहै बरष सत एक ।
एहि बिधि देखत फिरउँ मैं अंड कटाह अनेक ॥ ८०(ख) ॥

एहि बिधि देखत फिरउँ मैं अंड कटाह अनेक ॥ ८०(ख) ॥

लोक लोक प्रति भिन्न बिधाता । भिन्न बिष्णु सिव मनु दिसिवाता ॥
नर गंधर्ब भूत बेताला । किंनर निसिचर पसु खग ब्याला ॥

देव दनुज गन नाना जाती । सकल जीव तहँ आनहि भाँती ॥
महि सरि सागर सर गिरि नाना । सब प्रपंच तहँ आनइ आना ॥
अंडकोस प्रति प्रति निज रुपा । देखेउँ जिनस अनेक अनूपा ॥
अवधपुरी प्रति भुवन निनारी । सरजू भिन्न भिन्न नर नारी ॥
दसरथ कौसल्या सुनु ताता । बिबिध रूप भरतादिक भ्राता ॥
प्रति ब्रह्मांड राम अवतारा । देखेउँ बालबिनोद अपारा ॥

दो. भिन्न भिन्न मै दीख सबु अति बिचित्र हरिजान ।
अगनित भुवन फिरेउँ प्रभु राम न देखेउँ आन ॥ ८१(क) ॥

सोइ सिसुपन सोइ सोभा सोइ कृपाल रघुबीर ।
भुवन भुवन देखत फिरउँ प्रेरित मोह समीर ॥ ८१(ख) ॥

भ्रमत मोहि ब्रह्मांड अनेका । बीते मनहूँ कल्प सत एका ॥
फिरत फिरत निज आश्रम आयउँ । तहँ पुनि रहि कछु काल गवाँयउँ ॥
निज प्रभु जन्म अवध सुनि पायउँ । निर्भर प्रेम हरषि उठि धायउँ ॥
देखेउँ जन्म महोत्सव जाई । जेहि बिधि प्रथम कहा मैं गाई ॥
राम उदर देखेउँ जग नाना । देखत बनइ न जाइ बखाना ॥
तहँ पुनि देखेउँ राम सुजाना । माया पति कृपाल भगवाना ॥
करउँ बिचार बहोरि बहोरी । मोह कलिल ब्यापित मति मोरी ॥
उभय घरी महँ मैं सब देखा । भयउँ भ्रमित मन मोह बिसेषा ॥

दो. देखि कृपाल बिकल मोहि बिहँसे तब रघुबीर ।
बिहँसतही मुख बाहेर आयउँ सुनु मतिधीर ॥ ८२(क) ॥

सोइ लरिकाई मो सन करन लगे पुनि राम ।
कोटि भाँति समुझावउँ मनु न लहइ विश्राम ॥ ८२(ख) ॥

देखि चरित यह सो प्रभुताई । समुझत देह दसा बिसराई ॥
धरनि परेउँ मुख आव न बाता । त्राहि त्राहि आरत जन त्राता ॥
प्रेमाकुल प्रभु मोहि बिलोकी । निज माया प्रभुता तब रोकी ॥
कर सरोज प्रभु मम सिर धरेऊ । दीनदयाल सकल दुख हरेऊ ॥
कीन्ह राम मोहि बिगत बिमोहा । सेवक सुखद कृपा संदोहा ॥
प्रभुता प्रथम बिचारि बिचारी । मन महँ होइ हरष अति भारी ॥
भगत बछलता प्रभु के देखी । उपजी मम उर प्रीति बिसेषी ॥
सजल नयन पुलकित कर जोरी । कीन्हिउँ बहु बिधि विनय बहोरी ॥

दो. सुनि सप्रेम मम बानी देखि दीन निज दास ।
बचन सुखद गंभीर मृदु बोले रमानिवास ॥ ८३(क) ॥

काकभसुंडि मागु बर अति प्रसन्न मोहि जानि ।
अनिमादिक सिधि अपर रिधि मोच्छ सकल सुख खानि ॥ ८३(ख) ॥

ग्यान बिबेक बिरति बिग्याना । मुनि दुर्लभ गुन जे जग नाना ॥
आजु देउँ सब संसय नाहीं । मागु जो तोहि भाव मन माहीं ॥
सुनि प्रभु बचन अधिक अनुरागेउँ । मन अनुमान करन तब लागेऊँ ॥

प्रभु कह देन सकल सुख सही । भगति आपनी देन न कही ॥
भगति हीन गुन सब सुख ऐसे । लवन बिना बहु बिंजन जैसे ॥
भजन हीन सुख कवने काजा । अस बिचारि बोलेउँ खगराजा ॥
जौ प्रभु होइ प्रसन्न बर देहू । मो पर करहु कृपा अरु नेहू ॥
मन भावत बर मागउँ स्वामी । तुम्ह उदार उर अंतरजामी ॥

दो. अबिरल भगति बिसुध तव श्रुति पुरान जो गाव ।
जेहि खोजत जोगीस मुनि प्रभु प्रसाद कोउ पाव ॥ ८४ (क) ॥

भगत कल्पतरु प्रनत हित कृपा सिंधु सुख धाम ।
सोइ निज भगति मोहि प्रभु देहु दया करि राम ॥ ८४ (ख) ॥

एवमस्तु कहि रघुकुलनायक । बोले बचन परम सुखदायक ॥
सुनु बायस तैं सहज सयाना । काहे न मागसि अस बरदाना ॥

सब सुख खानि भगति तैं मागी । नहिं जग कोउ तोहि सम बड़भागी ॥
जो मुनि कोटि जतन नहिं लहहीं । जे जप जोग अनल तन दहहीं ॥
रीझेउँ देखि तोरि चतुराई । मागेहु भगति मोहि अति भाई ॥
सुनु बिहंग प्रसाद अब मोरें । सब सुभ गुन बसिहहिं उर तोरें ॥
भगति ग्यान विग्यान बिरागा । जोग चरित्र रहस्य विभागा ॥
जानब तैं सबही कर भेदा । मम प्रसाद नहिं साधन खेदा ॥

दो. माया संभव भ्रम सब अब न ब्यापिहहिं तोहि ।
जानेसु ब्रह्म अनादि अज अगुन गुनाकर मोहि ॥ ८५ (क) ॥

मोहि भगत प्रिय संतत अस बिचारि सुनु काग ।
कायँ बचन मन मम पद करेसु अचल अनुराग ॥ ८५ (ख) ॥

अब सुनु परम विमल मम बानी । सत्य सुगम निगमादि बखानी ॥
निज सिद्धांत सुनावउँ तोही । सुनु मन धरु सब तजि भजु मोही ॥
मम माया संभव संसारा । जीव चराचर बिबिधि प्रकारा ॥
सब मम प्रिय सब मम उपजाए । सब ते अधिक मनुज मोहि भाए ॥
तिन्ह महुं द्विज द्विज महुं श्रुतिधारी । तिन्ह महुं निगम धरम अनुसारी ॥
तिन्ह महुं प्रिय बिरक्त पुनि ग्यानी । ग्यानिहु ते अति प्रिय विग्यानी ॥
तिन्ह ते पुनि मोहि प्रिय निज दासा । जेहि गति मोरि न दूसरि आसा ॥
पुनि पुनि सत्य कहउँ तोहि पाहीं । मोहि सेवक सम प्रिय कोउ नाही ॥
भगति हीन बिरचि किन होई । सब जीवहु सम प्रिय मोहि सोई ॥
भगतिवंत अति नीचउ प्रानी । मोहि प्रानप्रिय असि मम बानी ॥

दो. सुचि सुसील सेवक सुमति प्रिय कहू काहि न लाग ।
श्रुति पुरान कह नीति असि सावधान सुनु काग ॥ ८६ ॥

एक पिता के विपुल कुमारा । होहिं पृथक गुन सील अचारा ॥
कोउ पंडित कोउ तापस ग्याता । कोउ धनवंत सूर कोउ दाता ॥
कोउ सर्वग्य धर्मरत कोई । सब पर पितहिं प्रीति सम होई ॥
कोउ पितु भगत बचन मन कर्मा । सपनेहुं जान न दूसर धर्मा ॥

सो सुत प्रिय पितु प्रान समाना । जद्यपि सो सब भाँति अयाना ॥
एहि बिधि जीव चराचर जेते । त्रिजग देव नर असुर समेते ॥
अखिल बिस्व यह मोर उपाया । सब पर मोहि बराबरि दाया ॥
तिन्ह महुं जो परिहरि मद माया । भजै मोहि मन बच अरु काया ॥

दो. पुरूष नपुंसक नारि वा जीव चराचर कोइ ।
सर्व भाव भज कपट तजि मोहि परम प्रिय सोइ ॥ ८७ (क) ॥

सो. सत्य कहउँ खग तोहि सुचि सेवक मम प्रानप्रिय ।
अस बिचारि भजु मोहि परिहरि आस भरोस सब ॥ ८७ (ख) ॥

कबहुं काल न ब्यापिहि तोही । सुमिरेसु भजेसु निरंतर मोही ॥
प्रभु बचनामृत सुनि न अघाऊँ । तनु पुलकित मन अति हरषाऊँ ॥
सो सुख जानइ मन अरु काना । नहिं रसना पहिं जाइ बखाना ॥
प्रभु सोभा सुख जानहिं नयना । कहि किमि सकहिं तिन्हहिं नहिं बयना ॥
बहु बिधि मोहि प्रबोधि सुख देई । लगे करन सिसु कौतुक तेई ॥
सजल नयन कछु मुख करि रूखा । चितइ मातु लागी अति भूखा ॥
देखि मातु आतुर उठि धाई । कहि मृदु बचन लिए उर लाई ॥
गोद राखि कराव पय पाना । रघुपति चरित ललित कर गाना ॥

सो. जेहि सुख लागि पुरारि असुभ बेष कृत सिव सुखद ।
अवधपुरी नर नारि तेहि सुख महुं संतत मगन ॥ ८८ (क) ॥

सोइ सुख लवलेस जिन्ह बारक सपनेहुं लहेउ ।
ते नहिं गनहिं खगेस ब्रह्मसुखहिं सज्जन सुमति ॥ ८८ (ख) ॥

मैं पुनि अवध रहेउँ कछु काला । देखेउँ बालबिनोद रसाला ॥
राम प्रसाद भगति बर पायउँ । प्रभु पद बंदि निजाश्रम आयउँ ॥
तब ते मोहि न ब्यापी माया । जब ते रघुनायक अपनाया ॥
यह सब गुप्त चरित मैं गावा । हरि मायाँ जिमि मोहि नचावा ॥
निज अनुभव अब कहउँ खगेसा । बिनु हरि भजन न जाहि कलेसा ॥
राम कृपा बिनु सुनु खगराई । जानि न जाइ राम प्रभुताई ॥
जानें बिनु न होइ परतीती । बिनु परतीति होइ नहिं प्रीती ॥
प्रीति बिना नहिं भगति दिदाई । जिमि खगपति जल कै चिकनाई ॥

सो. बिनु गुर होइ कि ग्यान ग्यान कि होइ बिराग बिनु ।
गावहिं बेद पुरान सुख कि लहिअ हरि भगति बिनु ॥ ८९ (क) ॥

कोउ विश्राम कि पाव तात सहज संतोष बिनु ।
चलै कि जल बिनु नाव कोटि जतन पचि पचि मरिअ ॥ ८९ (ख) ॥

बिनु संतोष न काम नसाही । काम अछत सुख सपनेहुं नाही ॥
राम भजन बिनु मिटहिं कि कामा । थल बिहीन तरु कबहुं कि जामा ॥
बिनु विग्यान कि समता आवइ । कोउ अवकास कि नभ बिनु पावइ ॥
श्रद्धा बिना धर्म नहिं होई । बिनु महि गंध कि पावइ कोई ॥

बिनु तप तेज कि कर बिस्तारा । जल बिनु रस कि होइ संसारा ॥
सील कि मिल बिनु बुध सेवकाई । जिमि बिनु तेज न रूप गोसाई ॥
निज सुख बिनु मन होइ कि थीरा । परस कि होइ बिहीन समीरा ॥
कवनिउ सिद्धि कि बिनु बिस्वासा । बिनु हरि भजन न भव भय नासा ॥

दो. बिनु बिस्वास भगति नहिं तेहि बिनु द्रवहिं न रामु ।
राम कृपा बिनु सपनेहुँ जीव न लह विश्रामु ॥ १०(क) ॥

सो. अस बिचारि मतिधीर तजि कुतर्क संसय सकल ।
भजहु राम रघुवीर करुनाकर सुंदर सुखद ॥ १०(ख) ॥

निज मति सरिस नाथ मैं गाई । प्रभु प्रताप महिमा खगराई ॥
कहेउँ न कछु करि जुगुति बिसेषी । यह सब मैं निज नयनन्हि देखी ॥
महिमा नाम रूप गुन गाथा । सकल अमित अनंत रघुनाथा ॥
निज निज मति मुनि हरि गुन गावहिं । निगम सेश सिव पार न पावहिं ॥
तुम्हहि आदि खग मसक प्रजंता । नभ उड़ाहिं नहिं पावहिं अंता ॥
तिमि रघुपति महिमा अवगाहा । तात कबहुँ कोउ पाव कि थाहा ॥
रामु काम सत कोटि सुभग तन । दुर्गा कोटि अमित अरि मर्दन ॥
सक्र कोटि सत सरिस बिलासा । नभ सत कोटि अमित अवकासा ॥

दो. मरुत कोटि सत बिपुल बल रबि सत कोटि प्रकास ।
ससि सत कोटि सुसीतल समन सकल भव त्रास ॥ ११(क) ॥

काल कोटि सत सरिस अति दुस्तर दुर्ग दुरंत ।
धूमकेतु सत कोटि सम दुराधरष भगवंत ॥ ११(ख) ॥

अगाध सत कोटि पताला । समन कोटि सत सरिस कराला ॥
तीरथ अमित कोटि सम पावन । नाम अखिल अघ पूग नसावन ॥
हिमगिरि कोटि अचल रघुवीरा । सिंधु कोटि सत सम गंभीरा ॥
कामधेनु सत कोटि समाना । सकल काम दायक भगवाना ॥
सारद कोटि अमित चतुराई । बिधि सत कोटि सृष्टि निपुनाई ॥
बिष्णु कोटि सम पालन कर्ता । रुद्र कोटि सत सम संहर्ता ॥
धनद कोटि सत सम धनवाना । माया कोटि प्रपंच निधाना ॥
भार धरन सत कोटि अहीसा । निरवधि निरुपम प्रभु जगदीसा ॥

छं. निरुपम न उपमा आन राम समान रामु निगम कहै ।
जिमि कोटि सत खद्योत सम रबि कहत अति लघुता लहै ॥
एहि भाँति निज निज मति बिलास मुनिस हरिहि बखानहीं ।
प्रभु भाव गाहक अति कृपाल सप्रेम सुनि सुख मानहीं ॥

दो. रामु अमित गुन सागर थाह कि पावइ कोइ ।
संतन्ह सन जस किछु सुनेउँ तुम्हहि सुनायउँ सोइ ॥ १२(क) ॥

सो. भाव बस्य भगवान सुख निधान करुना भवन ।
तजि ममता मद मान भजिअ सदा सीता रवन ॥ १२(ख) ॥

सुनि भुसुंडि के बचन सुहाए । हरषित खगपति पंख फुलाए ॥
नयन नीर मन अति हरषाना । श्रीरघुपति प्रताप उर आना ॥
पाछिल मोह समुझि पछिताना । ब्रह्म अनादि मनुज करि माना ॥
पुनि पुनि काग चरन सिरु नावा । जानि राम सम प्रेम बढ़ावा ॥
गुर बिनु भव निधि तरइ न कोई । जौं बिरंचि संकर सम होई ॥
संसय सर्प ग्रसेउ मोहि ताता । दुखद लहरि कुतर्क बहु ब्राता ॥
तव सरूप गारुड़ रघुनायक । मोहि जिआयउ जन सुखदायक ॥
तव प्रसाद मम मोह नसाना । राम रहस्य अनूपम जाना ॥

दो. ताहि प्रससि बिबिध विधि सीस नाइ कर जोरि ।
बचन बिनीत सप्रेम मृदु बोलेउ गरुड़ बहोरि ॥ १३(क) ॥

प्रभु अपने अबिबेक ते बूझउँ स्वामी तोहि ।
कृपासिंधु सादर कहहु जानि दास निज मोहि ॥ १३(ख) ॥

तुम्ह सबंग्य तन्य तम पारा । सुमति सुसील सरल आचारा ॥
ग्यान बिरति बिग्यान निवासा । रघुनायक के तुम्ह प्रिय दासा ॥
कारन कवन देह यह पाई । तात सकल मोहि कहहु बुझाई ॥
राम चरित सर सुंदर स्वामी । पायहु कहाँ कहहु नभगामी ॥
नाथ सुना मैं अस सिव पाहीं । महा प्रलयहुँ नास तव नाहीं ॥
मुधा बचन नहिं ईस्वर कहई । सोउ मोरें मन संसय अहई ॥
अग जग जीव नाग नर देवा । नाथ सकल जगु काल कलेवा ॥
अंड कटाह अमित लय कारी । कालु सदा दुरतिक्रम भारी ॥

सो. तुम्हहि न ब्यापत काल अति कराल कारन कवन ।
मोहि सो कहहु कृपाल ग्यान प्रभाव कि जोग बल ॥ १४(क) ॥

दो. प्रभु तव आश्रम आएँ मोर मोह भ्रम भाग ।
कारन कवन सो नाथ सब कहहु सहित अनुराग ॥ १४(ख) ॥

गरुड़ गिरा सुनि हरषेउ कागा । बोलेउ उमा परम अनुरागा ॥
धन्य धन्य तव मति उरगारी । प्रस्न तुम्हारि मोहि अति प्यारी ॥
सुनि तव प्रस्न सप्रेम सुहाई । बहुत जनम कै सुधि मोहि आई ॥
सब निज कथा कहउँ मैं गाई । तात सुनहु सादर मन लाई ॥
जप तप मख सम दम ब्रत दाना । बिरति बिबेक जोग बिग्याना ॥
सब कर फल रघुपति पद प्रेमा । तेहि बिनु कोउ न पावइ छेमा ॥
एहि तन राम भगति मैं पाई । ताते मोहि ममता अधिकाई ॥
जेहि तें कछु निज स्वारथ होई । तेहि पर ममता कर सब कोई ॥

सो. पन्नगारि असि नीति श्रुति संमत सज्जन कहहिं ।
अति नीचहु सन प्रीति करिअ जानि निज परम हित ॥ १५(क) ॥

पाट कीट तें होइ तेहि तें पाटंबर रुचिर ।
कृमि पालइ सबु कोइ परम अपावन प्रान सम ॥ १५ (ख) ॥

स्वारथ साँच जीव कहूँ एहा । मन क्रम बचन राम पद नेहा ॥
सोइ पावन सोइ सुभग सरीरा । जो तनु पाइ भजिअ रघुवीरा ॥
राम बिमुख लहि बिधि सम देही । कवि कोविद न प्रसंसहिं तेही ॥
राम भगति एहिं तन उर जामी । ताते मोहि परम प्रिय स्वामी ॥
तजउँ न तन निज इच्छा मरना । तन बिनु बेद भजन नहिं बरना ॥
प्रथम मोहँ मोहि बहुत विगोवा । राम बिमुख सुख कबहुँ न सोवा ॥
नाना जनम कर्म पुनि नाना । किए जोग जप तप मख दाना ॥
कवन जोनि जनमेउँ जहँ नाहीं । मैं खगेस भ्रमि भ्रमि जग माहीं ॥
देखेउँ करि सब करम गोसाई । सुखी न भयउँ अबहिं की नाई ॥
सुधि मोहि नाथ जन्म बहु केरी । सिव प्रसाद मति मोहँ न घेरी ॥

दो. प्रथम जन्म के चरित अब कहूँ सुनहु बिहगेस ।
सुनि प्रभु पद रति उपजइ जातें मिटहिं कलेस ॥ १६ (क) ॥

पूरुब कल्प एक प्रभु जुग कलिजुग मल मूल ॥
नर अरु नारि अधर्म रत सकल निगम प्रतिकूल ॥ १६ (ख) ॥

तेहि कलिजुग कोसलपुर जाई । जन्मत भयउँ सूद्र तनु पाई ॥
सिव सेवक मन क्रम अरु बानी । आन देव निंदक अभिमानी ॥
धन मद मत्त परम बाचाला । उग्रबुद्धि उर दंभ बिसाला ॥
जदपि रहेउँ रघुपति रजधानी । तदपि न कछु महिमा तब जानी ॥
अब जाना मैं अवध प्रभावा । निगमागम पुरान अस गावा ॥
कवनेहुँ जन्म अवध बस जोई । राम परायन सो परि होई ॥
अवध प्रभाव जान तब प्रानी । जब उर बसहिं रामु धनुपानी ॥
सो कलिकाल कठिन उरगारी । पाप परायन सब नर नारी ॥

दो. कलिमल ग्रसे धर्म सब लुप्त भए सदग्रंथ ।
दंभिन्ह निज मति कल्पि करि प्रगट किए बहु पंथ ॥ १७ (क) ॥

भए लोग सब मोहबस लोभ ग्रसे सुभ कर्म ।
सुनु हरिजान ग्यान निधि कहूँ कछुक कलिधर्म ॥ १७ (ख) ॥

बरन धर्म नहिं आश्रम चारी । श्रुति विरोध रत सब नर नारी ॥
द्विज श्रुति बेचक भूप प्रजासन । कोउ नहिं मान निगम अनुसासन ॥
मारग सोइ जा कहूँ जोइ भावा । पंडित सोइ जो गाल बजावा ॥
मिथ्यारंभ दंभ रत जोई । ता कहूँ संत कहइ सब कोई ॥
सोइ सयान जो परधन हारी । जो कर दंभ सो बड़ आचारी ॥
जौ कह झूठ मसखरी जाना । कलिजुग सोइ गुनवंत बखाना ॥
निराचार जो श्रुति पथ त्यागी । कलिजुग सोइ ग्यानी सो बिरागी ॥
जोकें नख अरु जटा बिसाला । सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला ॥

दो. असुभ बेष भूषन धरें भच्छाभच्छ जे खाहिं ।
तेइ जोगी तेइ सिद्ध नर पूज्य ते कलिजुग माहिं ॥ १८ (क) ॥

सो. जे अपकारी चार तिन्ह कर गौरव मान्य तेइ ।
मन क्रम बचन लबार तेइ बकता कलिकाल महुँ ॥ १८ (ख) ॥

नारि बिबस नर सकल गोसाई । नाचहिं नट मर्कट की नाई ॥
सूद्र द्विजन्ह उपदेसहिं ग्याना । मेलि जनेऊ लेहिं कुदाना ॥
सब नर काम लोभ रत क्रोधी । देव विप्र श्रुति संत विरोधी ॥
गुन मंदिर सुंदर पति त्यागी । भजहिं नारि पर पुरुष अभागी ॥
सौभागिनी बिभूषन हीना । विधवन्ह के सिंगार नबीना ॥
गुर सिष बधिर अंध का लेखा । एक न सुनइ एक नहिं देखा ॥
हरइ सिष्य धन सोक न हरई । सो गुर घोर नरक महुँ परई ॥
मातु पिता बालकन्ह बोलाबहिं । उदर भरै सोइ धर्म सिखावहिं ॥

दो. ब्रह्म ग्यान बिनु नारि नर कहहिं न दूसरि बात ।
कौड़ी लागि लोभ बस करहिं विप्र गुर घात ॥ १९ (क) ॥

बादहिं सूद्र द्विजन्ह सन हम तुम्ह ते कछु घाटि ।
जानइ ब्रह्म सो विप्रवर आँखि देखावहिं डाटि ॥ १९ (ख) ॥

पर त्रिय लंपट कपट सयाने । मोह द्रोह ममता लपटाने ॥
तेइ अभेदवादी ग्यानी नर । देखा मैं चरित्र कलिजुग कर ॥
आपु गए अरु तिन्हहू घालहिं । जे कहूँ सत मारग प्रतिपालहिं ॥
कल्प कल्प भरि एक एक नरका । परहिं जे दूषहिं श्रुति करि तरका ॥
जे बरनाधम तेलि कुम्हारा । स्वपच किरात कोल कलवारा ॥
नारि मुई गृह संपति नासी । मूड़ मुड़ाइ होहिं सन्यासी ॥
ते बिप्रन्ह सन आपु पुजावहिं । उभय लोक निज हाथ नसावहिं ॥
विप्र निरच्छर लोलुप कामी । निराचार सठ बृषली स्वामी ॥
सूद्र करहिं जप तप व्रत नाना । बैठि बरासन कहहिं पुराना ॥
सब नर कल्पित करहिं अचारा । जाइ न बरनि अनीति अपारा ॥

दो. भए बरन संकर कलि भिन्नसेतु सब लोग ।
करहिं पाप पावहिं दुख भय रुज सोक बियोग ॥ १०० (क) ॥

श्रुति संमत हरि भक्ति पथ संजुत बिरति बिबेक ।
तेहि न चलहिं नर मोह बस कल्पहिं पंथ अनेक ॥ १०० (ख) ॥

छं. बहु दाम सँवारहिं धाम जती । बिषया हरि लीन्हि न रहि बिरती ॥
तपसी धनवंत दरिद्र गृही । कलि कौतुक तात न जात कही ॥
कुलवंति निकारहिं नारि सती । गृह आनिहिं चेरी निबेरि गती ॥
सुत मानहिं मातु पिता तब लौ । अबलानन दीख नहीं जब लौ ॥
ससुरारि पिआरि लगी जब तें । रिरूप कुटुंब भए तब तें ॥
नृप पाप परायन धर्म नहीं । करि दंड बिडंब प्रजा नितही ॥
धनवंत कुलीन मलीन अपी । द्विज चिन्ह जनेउ उधार तपी ॥
नहिं मान पुरान न बेदहिं जो । हरि सेवक संत सही कलि सो ।

कवि बृंद उदार दुनी न सुनी । गुन दूषक ब्रात न कोपि गुनी ॥
कलि बारहिं बार दुकाल परै । बिनु अन्न दुखी सब लोग मरै ॥

दो. सुनु खगेस कलि कपट हठ दंभ द्वेष पाषंड ।
मान मोह मारादि मद ब्यापि रहे ब्रह्मंड ॥ १०१(क) ॥

तामस धर्म करहिं नर जप तप व्रत मख दान ।
देव न बरषहिं धरनीं बए न जामहिं धान ॥ १०१(ख) ॥

छं. अबला कच भूषन भूरि छुधा । धनहीन दुखी ममता बहुधा ॥
सुख चाहहिं मूढ़ न धर्म रता । मति थोरि कठोरि न कोमलता ॥ १ ॥

नर पीड़ित रोग न भोग कही । अभिमान बिरोध अकारनहीं ॥
लघु जीवन संबतु पंच दसा । कलपांत न नास गुमानु असा ॥ २ ॥

कलिकाल बिहाल किए मनुजा । नहिं मानत क्वौ अनुजा तनुजा ।
नहिं तोष बिचार न सीतलता । सब जाति कुजाति भए मगता ॥ ३ ॥

इरिषा परुषाच्छर लोलुपता । भरि पूरि रही समता बिगता ॥
सब लोग बियोग बिसोक हुए । बरनाश्रम धर्म अचार गए ॥ ४ ॥

दम दान दया नहिं जानपनी । जड़ता परबंचनताति घनी ॥
तनु पोषक नारि नरा सगरे । परनिंदक जे जग मो बगरे ॥ ५ ॥

दो. सुनु ब्यालारि काल कलि मल अवगुन आगार ।
गुनउँ बहुत कलिजुग कर बिनु प्रयास निस्तार ॥ १०२(क) ॥

कृतजुग त्रेता द्वापर पूजा मख अरु जोग ।
जो गति होइ सो कलि हरि नाम ते पावहिं लोग ॥ १०२(ख) ॥

कृतजुग सब जोगी बिग्यानी । करि हरि ध्यान तरहिं भव प्रानी ॥
त्रेताँ बिबिध जग्य नर करहीं । प्रभुहिं समर्पि कर्म भव तरहीं ॥
द्वापर करि रघुपति पद पूजा । नर भव तरहिं उपाय न दूजा ॥
कलिजुग केवल हरि गुन गाहा । गावत नर पावहिं भव थाहा ॥
कलिजुग जोग न जग्य न ग्याना । एक अधार राम गुन गाना ॥
सब भरोस तजि जो भज रामहि । प्रेम समेत गाव गुन ग्रामहि ॥
सोइ भव तर कछु संसय नाही । नाम प्रताप प्रगट कलि माहीं ॥
कलि कर एक पुनीत प्रतापा । मानस पुन्य होहिं नहिं पापा ॥

दो. कलिजुग सम जुग आन नहिं जौ नर कर बिस्वास ।
गाइ राम गुन गन बिमलँ भव तर बिनहिं प्रयास ॥ १०३(क) ॥

प्रगट चारि पद धर्म के कलिल महुँ एक प्रधान ।
जेन केन बिधि दीन्हें दान करइ कल्यान ॥ १०३(ख) ॥

नित जुग धर्म होहिं सब केरे । हृदयँ राम माया के प्रेरे ॥
सुद्ध सत्व समता बिग्याना । कृत प्रभाव प्रसन्न मन जाना ॥
सत्व बहुत रज कछु रति कर्मा । सब बिधि सुख त्रेता कर धर्मा ॥
बहु रज स्वल्प सत्व कछु तामस । द्वापर धर्म हरष भय मानस ॥
तामस बहुत रजोगुन थोरा । कलि प्रभाव बिरोध चहुँ ओरा ॥
बुध जुग धर्म जानि मन माहीं । तजि अधर्म रति धर्म कराहीं ॥
काल धर्म नहिं ब्यापहिं ताही । रघुपति चरन प्रीति अति जाही ॥
नट कृत बिकट कपट खगराया । नट सेवकहि न ब्यापइ माया ॥

दो. हरि माया कृत दोष गुन बिनु हरि भजन न जाहिं ।
भजिअ राम तजि काम सब अस बिचारि मन माहिं ॥ १०४(क) ॥

तेहि कलिकाल बरष बहु बसेउँ अवध बिहगेस ।
परेउ दुकाल बिपति बस तब मै गयउँ बिदेस ॥ १०४(ख) ॥

गयउँ उजेनी सुनु उरगारी । दीन मलीन दरिद्र दुखारी ॥
गएँ काल कछु संपति पाई । तहँ पुनि करउँ संभु सेवकाई ॥
बिप्र एक वैदिक सिव पूजा । करइ सदा तेहि काजु न दूजा ॥
परम साधु परमारथ बिंदक । संभु उपासक नहिं हरि निंदक ॥
तेहि सेवउँ मै कपट समेता । द्विज दयाल अति नीति निकेता ॥
बाहिज नम्र देखि मोहि साई । बिप्र पढ़ाव पुत्र की नाई ॥
संभु मंत्र मोहि द्विजबर दीन्हा । सुभ उपदेस बिबिध बिधि कीन्हा ॥
जपउँ मंत्र सिव मंदिर जाई । हृदयँ दंभ अहमिति अधिकाई ॥

दो. मै खल मल संकुल मति नीच जाति बस मोह ।
हरि जन द्विज देखें जरउँ करउँ बिष्णु कर द्रोह ॥ १०५(क) ॥

सो. गुर नित मोहि प्रबोध दुखित देखि आचरन मम ।
मोहि उपजइ अति क्रोध दंभिहि नीति कि भावई ॥ १०५(ख) ॥

एक बार गुर लीन्ह बोलाई । मोहि नीति बहु भाँति सिखाई ॥
सिव सेवा कर फल सुत सोई । अबिरल भगति राम पद होई ॥
रामहिं भजहिं तात सिव धाता । नर पावँर कै केतिक बाता ॥
जासु चरन अज सिव अनुरागी । तातु द्रोहँ सुख चहसि अभागी ॥
हर कहुँ हरि सेवक गुर कहेऊ । सुनि खगनाथ हृदय मम दहेऊ ॥
अधम जाति मै बिद्या पाएँ । भयउँ जथा अहि दूध पिआएँ ॥
मानी कुटिल कुभाग्य कुजाती । गुर कर द्रोह करउँ दिनु राती ॥
अति दयाल गुर स्वल्प न क्रोधा । पुनि पुनि मोहि सिखाव सुबोधा ॥
जेहि ते नीच बड़ाई पावा । सो प्रथमहिं हति ताहि नसावा ॥
धूम अनल संभव सुनु भाई । तेहि बुझाव घन पदवी पाई ॥
रज मग परी निरादर रहई । सब कर पद प्रहार नित सहई ॥
मरुत उड़ाव प्रथम तेहि भरई । पुनि नृप नयन किरिटीन्ह परई ॥
सुनु खगपति अस समुझि प्रसंगा । बुध नहिं करहिं अधम कर संग्गा ॥
कवि कोबिद गावहिं असि नीती । खल सन कलह न भल नहिं प्रीती ॥

उदासीन नित रहिअ गोसाईं। खल परिहरिअ स्वान की नाई ॥
मैं खल हृदयें कपट कुटिलाई। गुर हित कहइ न मोहि सोहाई ॥

दो. एक बार हर मंदिर जपत रहेउँ सिव नाम।
गुर आयउ अभिमान तें उठि नहिं कीन्ह प्रनाम ॥१०६(क) ॥

सो दयाल नहिं कहेउ कछु उर न रोष लवलेस।
अति अघ गुर अपमानता सहि नहिं सके महेस ॥१०६(ख) ॥

मंदिर माझ भई नभ बानी। रे हतभाग्य अग्य अभिमानी ॥
जद्यपि तव गुर कें नहिं क्रोधा। अति कृपाल चित सम्यक बोधा ॥
तदपि साप सठ दैहउँ तोही। नीति बिरोध सोहाइ न मोही ॥
जौ नहिं दंड करौ खल तोरा। भ्रष्ट होइ श्रुतिमारग मोरा ॥
जे सठ गुर सन इरिषा करहीं। रौरव नरक कोटि जुग परहीं ॥
त्रिजग जोनि पुनि धरहिं सरीरा। अयुत जन्म भरि पावहिं पीरा ॥
बैठ रहेसि अजगर इव पापी। सर्प होहि खल मल मति व्यापी ॥
महा बिटप कोटर महुँ जाई ॥ रहु अधमाधम अधगति पाई ॥

दो. हाहाकार कीन्ह गुर दारुन सुनि सिव साप ॥
कंपित मोहि बिलोकि अति उर उपजा परिताप ॥१०७(क) ॥

करि दंडवत सप्रेम द्विज सिव सन्मुख कर जोरि।
बिनय करत गदगद स्वर समुझि घोर गति मोरि ॥१०७(ख) ॥

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं। विंभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं। चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं ॥
निराकारमोकारमूलं तुरीयं। गिरा ग्यान गोतीतमीशं गिरीशं ॥
करालं महाकाल कालं कृपालं। गुणागार संसारपारं नतोऽहं ॥
तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं। मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरं ॥
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा। लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगा ॥
चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं। प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं ॥
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं। प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥
प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं। अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं ॥
त्रयःशूल निर्मूलनं शूलपाणिं। भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं ॥
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी। सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ॥
चिदानंदसंदोह मोहापहारी। प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥
न यावद् उमानाथ पादारविन्दं। भजंतीह लोके परे वा नराणां ॥
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं। प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं ॥
न जानामि योगं जपं नैव पूजां। नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं ॥
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं। प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो ॥
श्लोक-रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।

ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥ १ ॥

दो. -सुनि बिनती सर्वग्य सिव देखि ब्रिप्र अनुरागु।
पुनि मंदिर नभबानी भइ द्विजवर बर मागु ॥१०८(क) ॥

जौ प्रसन्न प्रभु मो पर नाथ दीन पर नेहु।
निज पद भगति देइ प्रभु पुनि दूसर बर देहु ॥१०८(ख) ॥

तव माया बस जीव जड़ संतत फिरइ भुलान।
तेहि पर क्रोध न करिअ प्रभु कृपा सिंधु भगवान ॥१०८(ग) ॥

संकर दीनदयाल अब एहि पर होहु कृपाल।
साप अनुग्रह होइ जेहिं नाथ थोरेही काल ॥१०८(घ) ॥

एहि कर होइ परम कल्याना। सोइ करहु अब कृपानिधाना ॥
बिप्रगिरा सुनि परहित सानी। एवमस्तु इति भइ नभबानी ॥
जदपि कीन्ह एहिं दारुन पापा। मैं पुनि दीन्ह कोप करि सापा ॥
तदपि तुम्हार साधुता देखी। करिहउँ एहि पर कृपा बिसेषी ॥
छमासील जे पर उपकारी। ते द्विज मोहि प्रिय जथा खरारी ॥
मोर श्राप द्विज व्यर्थ न जाइहि। जन्म सहस अवस्य यह पाइहि ॥
जनमत मरत दुसह दुख होई। अहि स्वल्पउ नहिं व्यापिहि सोई ॥
कवनेउँ जन्म मिटिहि नहिं ग्याना। सुनहि सूद्र मम बचन प्रवाना ॥
रघुपति पुरी जन्म तब भयऊ। पुनि तैं मम सेवाँ मन दयऊ ॥
पुरी प्रभाव अनुग्रह मोरें। राम भगति उपजिहि उर तोरें ॥
सुनु मम बचन सत्य अब भाई। हरितोषन ब्रत द्विज सेवकाई ॥
अब जनि करहि बिप्र अपमाना। जानेहु संत अनंत समाना ॥
इंद्र कुलिस मम सूल बिसाला। कालदंड हरि चक्र कराला ॥
जो इन्ह कर मारा नहिं मरई। बिप्रद्रोह पावक सो जरई ॥
अस बिबेक राखेहु मन माहीं। तुम्ह कहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥
औरउ एक आसिषा मोरी। अप्रतिहत गति होइहि तोरी ॥

दो. सुनि सिव बचन हरषि गुर एवमस्तु इति भाषि।
मोहि प्रबोधि गयउ गृह संभु चरन उर राखि ॥१०९(क) ॥

प्रेरित काल बिधि गिरि जाइ भयउँ मैं ब्याल।
पुनि प्रयास बिनु सो तनु जजेउँ गाँ कछु काल ॥१०९(ख) ॥

जोइ तनु धरउँ तजउँ पुनि अनायास हरिजान।
जिमि नूतन पट पहिरइ नर परिहरइ पुरान ॥१०९(ग) ॥

सिवँ राखी श्रुति नीति अरु मैं नहिं पावा क्लेस।
एहि बिधि धरेउँ बिबिध तनु ग्यान न गयउ खगेस ॥१०९(घ) ॥

त्रिजग देव नर जोइ तनु धरउँ। तहँ तहँ राम भजन अनुसरऊँ ॥
एक सूल मोहि बिसर न काऊ। गुर कर कोमल सील सुभाऊ ॥
चरम देह द्विज कै मैं पाई। सुर दुर्लभ पुरान श्रुति गाई ॥
खेलउँ तहँ बालकन्ह मीला। करउँ सकल रघुनायक लीला ॥
प्रौढ़ भएँ मोहि पिता पढ़ावा। समझउँ सुनउँ गुनउँ नहिं भावा ॥
मन ते सकल बासना भागी। केवल राम चरन लय लागी ॥
कहु खगेस अस कवन अभागी। खरी सेव सुरधेनुहि त्यागी ॥

प्रेम मगन मोहि कछु न सोहाई । हारेउ पिता पढ़ाइ पढ़ाई ॥
 भए कालबस जब पितु माता । मै बन गयउँ भजन जनत्राता ॥
 जहँ जहँ बिपिन मुनीस्वर पावउँ । आश्रम जाइ जाइ सिरु नावउँ ॥
 बूझत तिन्हहि राम गुन गाहा । कहहिं सुनउँ हरषित खगनाहा ॥
 सुनत फिरउँ हरि गुन अनुवादा । अब्याहत गति संभु प्रसादा ॥
 छूटी त्रिबिध ईषना गाढ़ी । एक लालसा उर अति बाढ़ी ॥
 राम चरन बारिज जब देखौ । तब निज जन्म सफल करि लेखौ ॥
 जेहि पूँछउँ सोइ मुनि अस कहई । ईस्वर सर्व भूतमय अहई ॥
 निर्गुन मत नहिं मोहि सोहाई । सगुन ब्रह्म रति उर अधिकाई ॥

दो. गुर के बचन सुरति करि राम चरन मनु लाग ।
 रघुपति जस गावत फिरउँ छन छन नव अनुराग ॥ ११०(क) ॥

मेरु सिखर बट छायाँ मुनि लोमस आसीन ।
 देखि चरन सिरु नायउँ बचन कहेउँ अति दीन ॥ ११०(ख) ॥

सुनि मम बचन बिनीत मृदु मुनि कृपाल खगराज ।
 मोहि सादर पूँछत भए द्विज आयहु केहि काज ॥ ११०(ग) ॥

तब मैं कहा कृपानिधि तुम्ह सर्वग्य सुजान ।
 सगुन ब्रह्म अवराधन मोहि कहहु भगवान ॥ ११०(घ) ॥

तब मुनिष रघुपति गुन गाथा । कहे कछुक सादर खगनाथा ॥
 ब्रह्मग्यान रत मुनि बिग्यानि । मोहि परम अधिकारी जानी ॥
 लागे करन ब्रह्म उपदेसा । अज अद्वैत अगुन हृदयेसा ॥
 अकल अनीह अनाम अरुपा । अनुभव गम्य अखंड अनूपा ॥
 मन गोतीत अमल अबिनासी । निर्बिकार निरवधि सुख रासी ॥
 सो तैं ताहि तोहि नहिं भेदा । बारि वीचि इव गावहि बेदा ॥
 विविध भौंति मोहि मुनि समुझावा । निर्गुन मत मम हृदयँ न आवा ॥
 पुनि मैं कहेउँ नाइ पद सीसा । सगुन उपासन कहहु मुनीसा ॥
 राम भगति जल मम मन मीना । किमि बिलगाइ मुनीस प्रवीना ॥
 सोइ उपदेस कहहु करि दाया । निज नयनन्हि देखौ रघुराया ॥
 भरि लोचन बिलोकि अवधेसा । तब सुनिहउँ निर्गुन उपदेसा ॥
 मुनि पुनि कहि हरिकथा अनूपा । खंडि सगुन मत अगुन निरूपा ॥
 तब मैं निर्गुन मत कर दूरी । सगुन निरूपउँ करि हठ भूरी ॥
 उत्तर प्रतिउत्तर मैं कीन्हा । मुनि तन भए क्रोध के चीन्हा ॥
 सुनु प्रभु बहुत अवग्या किएँ । उपज क्रोध ग्यानिन्ह के हिएँ ॥
 अति संघरषन जौं कर कोई । अनल प्रगट चंदन ते होई ॥

दो. -बारंबार सकोप मुनि करइ निरुपन ग्यान ।
 मैं अपने मन बैठ तब करउँ विविध अनुमान ॥ १११(क) ॥

क्रोध कि द्वैतबुद्धि बिनु द्वैत कि बिनु अग्यान ।
 मायाबस परिछिन्न जड़ जीव कि ईस समान ॥ १११(ख) ॥

कबहुँ कि दुख सब कर हित ताकेँ । तेहि कि दरिद्र परस मनि जाकेँ ॥

परद्रोही की होहिं निसंका । कामी पुनि कि रहहिं अकलंका ॥
 बंस कि रह द्विज अनहित कीन्हें । कर्म कि होहिं स्वरूपहि चीन्हें ॥
 काहू सुमति कि खल सँग जामी । सुभ गति पाव कि परत्रिय गामी ॥
 भव कि परहिं परमात्मा बिंदक । सुखी कि होहिं कबहुँ हरिनिंदक ॥
 राजु कि रहइ नीति बिनु जानें । अघ कि रहहिं हरिचरित बखानें ॥
 पावन जस कि पुन्य बिनु होई । बिनु अघ अजस कि पावइ कोई ॥
 लाभु कि किछु हरि भगति समाना । जेहि गावहिं श्रुति संत पुराना ॥
 हानि कि जग एहि सम किछु भाई । भजिअ न रामहि नर तनु पाई ॥
 अघ कि पिसुनता सम कछु आना । धर्म कि दया सरिस हरिजाना ॥
 एहि बिधि अमिति जुगुति मन गुनऊँ । मुनि उपदेस न सादर सुनऊँ ॥
 पुनि पुनि सगुन पच्छु मैं रोपा । तब मुनि बोलेउ बचन सकोपा ॥
 मूढ़ परम सिख देउँ न मानसि । उत्तर प्रतिउत्तर बहु आनसि ॥
 सत्य बचन बिस्वास न करही । बायस इव सबही ते डरही ॥
 सठ स्वपच्छु तब हृदयँ बिसाला । सपदि होहि पच्छी चंडाला ॥
 लीन्ह श्राप मैं सीस चढ़ाई । नहिं कछु भय न दीनता आई ॥

दो. तुरत भयउँ मैं काग तब पुनि मुनि पद सिरु नाइ ।
 सुमिरि राम रघुबंस मनि हरषित चलेउँ उड़ाइ ॥ ११२(क) ॥

उमा जे राम चरन रत बिगत काम मद क्रोध ॥
 निज प्रभुमय देखहिं जगत केहि सन करहिं बिरोध ॥ ११२(ख) ॥

सुनु खगेस नहिं कछु रिषि दूषन । उर प्रेरक रघुबंस विभूषन ॥
 कृपासिंधु मुनि मति करि भोरी । लीन्हि प्रेम परिच्छा मोरी ॥
 मन बच क्रम मोहि निज जन जाना । मुनि मति पुनि फेरी भगवाना ॥
 रिषि मम महत सीलता देखी । राम चरन बिस्वास बिसेषी ॥
 अति बिसमय पुनि पुनि पछिताई । सादर मुनि मोहि लीन्ह बोलाई ॥
 मम परितोष विविध बिधि कीन्हा । हरषित राममंत्र तब दीन्हा ॥
 बालकरूप राम कर ध्याना । कहेउ मोहि मुनि कृपानिधाना ॥
 सुंदर सुखद मिहि अति भावा । सो प्रथमहिं मैं तुम्हहि सुनावा ॥
 मुनि मोहि कछुक काल तहँ राखा । रामचरितमानस तब भाषा ॥
 सादर मोहि यह कथा सुनाई । पुनि बोले मुनि गिरा सुहाई ॥
 रामचरित सर गुप्त सुहावा । संभु प्रसाद तात मैं पावा ॥
 तोहि निज भगत राम कर जानी । ताते मैं सब कहेउँ बखानी ॥
 राम भगति जिन्ह केँ उर नाही । कबहुँ न तात कहिअ तिन्ह पाहीं ॥
 मुनि मोहि विविध भौंति समुझावा । मैं सप्रेम मुनि पद सिरु नावा ॥
 निज कर कमल परसि मम सीसा । हरषित आसिष दीन्ह मुनीसा ॥
 राम भगति अबिरल उर तोरें । बसिहि सदा प्रसाद अब मोरें ॥

दो. -सदा राम प्रिय होहु तुम्ह सुभ गुन भवन अमान ।
 कामरूप इच्छामरन ग्यान बिराग निधान ॥ ११३(क) ॥

जेहिं आश्रम तुम्ह बसब पुनि सुमिरत श्रीभगवंत ।
 व्यापिहि तहँ न अबिद्या जोजन एक प्रजंत ॥ ११३(ख) ॥

काल कर्म गुन दोष सुभाऊ । कछु दुख तुम्हहि न व्यापिहि काऊ ॥

राम रहस्य ललित विधि नाना। गुप्त प्रगट इतिहास पुराना ॥
 विनु श्रम तुम्ह जानब सब सोऊ। नित नव नेह राम पद होऊ ॥
 जो इच्छा करिहहु मन माहीं। हरि प्रसाद कछु दुर्लभ नाहीं ॥
 सुनि मुनि आसिष सुनु मतिधीरा। ब्रह्मगिरा भइ गगन गँभीरा ॥
 एवमस्तु तव बच मुनि ग्यानी। यह मम भगत कर्म मन बानी ॥
 सुनि नभगिरा हरष मोहि भयऊ। प्रेम मगन सब संसय गयऊ ॥
 करि बिनती मुनि आयसु पाई। पद सरोज पुनि पुनि सिरु नाई ॥
 हरष सहित एहिं आश्रम आयउँ। प्रभु प्रसाद दुर्लभ बर पायउँ ॥
 इहाँ बसत मोहि सुनु खग ईसा। बीते कलप सात अरु बीसा ॥
 करउँ सदा रघुपति गुन गाना। सादर सुनिहिं बिहंग सुजाना ॥
 जब जब अवधपुरी रघुबीरा। धरहिं भगत हित मनुज सरीरा ॥
 तब तब जाइ राम पुर रहऊँ। सिसुलीला बिलोकि सुख लहऊँ ॥
 पुनि उर राखि राम सिसुरूपा। निज आश्रम आवउँ खगभूपा ॥
 कथा सकल मैं तुम्हहि सुनाई। काग देह जेहिं कारन पाई ॥
 कहिउँ तात सब प्रस्न तुम्हारी। राम भगति महिमा अति भारी ॥

दो. ताते यह तन मोहि प्रिय भयउ राम पद नेह।
 निज प्रभु दरसन पायउँ गए सकल संदेह ॥ ११४ (क) ॥

मासपारायण, उन्तीसवाँ विश्राम
 भगति पच्छ हठ करि रहेउँ दीन्ह महारिषि साप।
 मुनि दुर्लभ बर पायउँ देखहु भजन प्रताप ॥ ११४ (ख) ॥

जे असि भगति जानि परिहरहीं। केवल ग्यान हेतु श्रम करहीं ॥
 ते जड़ कामधेनु गृहं त्यागी। खोजत आकु फिरहिं पय लागी ॥
 सुनु खगोस हरि भगति बिहाई। जे सुख चाहहिं आन उपाई ॥
 ते सठ महासिंधु विनु तरनी। पैरि पार चाहहिं जड़ करनी ॥
 सुनि भसुंडि के बचन भवानी। बोलेउ गरुड़ हरषि मृदु बानी ॥
 तव प्रसाद प्रभु मम उर माहीं। संसय सोक मोह भ्रम नाहीं ॥
 सुनेउँ पुनीत राम गुन ग्रामा। तुम्हरी कृपाँ लहेउँ विश्रामा ॥
 एक बात प्रभु पूँछउँ तोही। कहहु बुझाइ कृपानिधि मोही ॥
 कहहिं संत मुनि वेद पुराना। नहिं कछु दुर्लभ ग्यान समाना ॥
 सोइ मुनि तुम्ह सन कहेउ गोसाई। नहिं आदरेहु भगति की नाई ॥
 ग्यानहि भगतिहि अंतर केता। सकल कहहु प्रभु कृपा निकेता ॥
 सुनि उरगारि बचन सुख माना। सादर बोलेउ काग सुजाना ॥
 भगतिहि ग्यानहि नहिं कछु भेदा। उभय हरहिं भव संभव खेदा ॥
 नाथ मुनीस कहहिं कछु अंतर। सावधान सोउ सुनु बिहंगबर ॥
 ग्यान बिराग जोग बिग्याना। ए सब पुरुष सुनहु हरिजाना ॥
 पुरुष प्रताप प्रबल सब भाँती। अबला अबल सहज जड़ जाती ॥

दो. -पुरुष त्यागि सक नारिहि जो विरक्त मति धीर ॥
 न तु कामी विषयाबस बिमुख जो पद रघुबीर ॥ ११५ (क) ॥

सो. सोउ मुनि ग्याननिधान मृगनयनी विधु मुख निरखि।
 बिबस होइ हरिजान नारि बिष्णु माया प्रगट ॥ ११५ (ख) ॥

इहाँ न पच्छपात कछु राखउँ। वेद पुरान संत मत भाषउँ ॥
 मोह न नारि नारि कें रूपा। पन्नगारि यह रीति अनूपा ॥
 माया भगति सुनहु तुम्ह दोऊ। नारि बर्ग जानइ सब कोऊ ॥
 पुनि रघुबीरहि भगति पिआरी। माया खलु नर्तकी विचारी ॥
 भगतिहि सानुकूल रघुराया। ताते तेहि डरपति अति माया ॥
 राम भगति निरुपम निरुपाधी। बसइ जासु उर सदा अबाधी ॥
 तेहि बिलोकि माया सकुचाई। करि न सकइ कछु निज प्रभुताई ॥
 अस बिचारि जे मुनि बिग्यानी। जाचही भगति सकल सुख खानी ॥

दो. यह रहस्य रघुनाथ कर बेगि न जानइ कोइ।
 जो जानइ रघुपति कृपाँ सपनेहुँ मोह न होइ ॥ ११६ (क) ॥

औरउ ग्यान भगति कर भेद सुनहु सुप्रबीन।
 जो सुनि होइ राम पद प्रीति सदा अबिच्छिन ॥ ११६ (ख) ॥

सुनहु तात यह अकथ कहानी। समुझत बनइ न जाइ बखानी ॥
 ईस्वर अंस जीव अबिनासी। चेतन अमल सहज सुख रासी ॥
 सो मायाबस भयउ गोसाई। बँध्यो कीर मरकट की नाई ॥
 जड़ चेतनहि ग्रंथि परि गई। जदपि मृषा छूटत कठिनई ॥
 तब ते जीव भयउ संसारी। छूट न ग्रंथि न होइ सुखारी ॥
 श्रुति पुरान बहु कहेउ उपाई। छूट न अधिक अधिक अरुझाई ॥
 जीव हृदयँ तम मोह बिसेषी। ग्रंथि छूट किमि परइ न देखी ॥
 अस संजोग ईस जब करई। तबहुँ कदाचित सो निरुअरई ॥
 सात्त्विक श्रद्धा धेनु सुहाई। जौ हरि कृपाँ हृदयँ बस आई ॥
 जप तप ब्रत जम नियम अपारा। जे श्रुति कह सुभ धर्म अचारा ॥
 तेइ तन हरित चरै जब गाई। भाव बच्छ सिसु पाइ पेन्हाई ॥
 नोइ निवृत्ति पात्र बिस्वासा। निर्मल मन अहीर निज दासा ॥
 परम धर्ममय पय दुहि भाई। अवटै अनल अकाम बिहाई ॥
 तोष मरुत तब छुमाँ जुड़ावै। धृति सम जावनु देइ जमावै ॥
 मुदितौँ मथैं बिचार मथानी। दम अधार रजु सत्य सुबानी ॥
 तब मथि काढ़ि लेइ नवनीता। बिमल बिराग सुभग सुपुनीता ॥

दो. जोग अग्नि करि प्रगट तब कर्म सुभासुभ लाइ।
 बुद्धि सिरावैं ग्यान घृत ममता मल जरि जाइ ॥ ११७ (क) ॥

तब बिग्यानरूपिनि बुद्धि बिसद घृत पाइ।
 चित्त दिआ भरि धरै दृढ़ समता दिअटि बनाइ ॥ ११७ (ख) ॥

तीनि अवस्था तीनि गुन तेहि कपास तें काढ़ि।
 तूल तुरीय सँवारि पुनि बाती करै सुगाढ़ि ॥ ११७ (ग) ॥

सो. एहि बिधि लेसै दीप तेज रासि बिग्यानमय ॥
 जातहिं जासु समीप जरहिं मदादिक सलभ सब ॥ ११७ (घ) ॥

सोहमस्मि इति वृत्ति अखंडा । दीप सिखा सोइ परम प्रचंडा ॥
 आतम अनुभव सुख सुप्रकासा । तब भव मूल भेद भ्रम नासा ॥
 प्रबल अबिद्या कर परिवारा । मोह आदि तम मिटइ अपारा ॥
 तब सोइ बुद्धि पाइ उँजिआरा । उर गृहँ बैठि ग्रंथि निरुआरा ॥
 छोरन ग्रंथि पाव जौ सोई । तब यह जीव कृतारथ होई ॥
 छोरत ग्रंथि जानि खगराया । बिघ्न अनेक करइ तब माया ॥
 रिद्धि सिद्धि प्रेरइ बहु भाई । बुद्धहि लोभ दिखावहिं आई ॥
 कल बल छल करि जाहिं समीपा । अंचल बात बुझावहिं दीपा ॥
 होइ बुद्धि जौ परम सयानी । तिन्ह तन चितव न अनहित जानी ॥
 जौ तेहि बिघ्न बुद्धि नहिं बाधी । तौ बहोरि सुर करहिं उपाधी ॥
 इंद्री द्वार झरोखा नाना । तहँ तहँ सुर बैठे करि थाना ॥
 आवत देखहिं बिषय बयारी । ते हठि देही कपाट उघारी ॥
 जब सो प्रभंजन उर गृहँ जाई । तबहिं दीप विग्यान बुझाई ॥
 ग्रंथि न छूटि मिटा सो प्रकासा । बुद्धि विकल भइ बिषय बतासा ॥
 इंद्रिन्ह सुरन्ह न ग्यान सोहाई । बिषय भोग पर प्रीति सदाई ॥
 बिषय समीर बुद्धि कृत भोरी । तेहि विधि दीप को बार बहोरी ॥

दो. तब फिरि जीव बिबिध विधि पावइ संसृति क्लेस ।
 हरि माया अति दुस्तर तरि न जाइ बिहगेस ॥ ११८(क) ॥

कहत कठिन समुझत कठिन साधन कठिन बिबेक ।
 होइ घुनाच्छर न्याय जौ पुनि प्रत्यूह अनेक ॥ ११८(ख) ॥

ग्यान पंथ कृपान कै धारा । परत खगेस होइ नहिं बारा ॥
 जो निर्विघ्न पंथ निर्बहई । सो कैवल्य परम पद लहई ॥
 अति दुर्लभ कैवल्य परम पद । संत पुरान निगम आगम बद ॥
 राम भजत सोइ मुकुति गोसाई । अनइच्छित आवइ बरिआई ॥
 जिमि थल बिनु जल रहि न सकाई । कोटि भाँति कोउ करै उपाई ॥
 तथा मोच्छ सुख सुनु खगराई । रहि न सकइ हरि भगति बिहाई ॥
 अस बिचारि हरि भगत सयाने । मुक्ति निरादर भगति लुभाने ॥
 भगति करत बिनु जतन प्रयासा । संसृति मूल अबिद्या नासा ॥
 भोजन करिअ तृपिति हित लागी । जिमि सो असन पचवै जठरागी ॥
 असि हरिभगति सुगम सुखदाई । को अस मूढ न जाहि सोहाई ॥

दो. सेवक सेव्य भाव बिनु भव न तरिअ उरगारि ॥
 भजहु राम पद पंकज अस सिद्धांत बिचारि ॥ ११९(क) ॥

जो चेतन कहँ जड़ करइ जड़हि करइ चैतन्य ।
 अस समर्थ रघुनायकहिं भजहिं जीव ते धन्य ॥ ११९(ख) ॥

कहेउँ ग्यान सिद्धांत बुझाई । सुनहु भगति मनि कै प्रभुताई ॥
 राम भगति चिंतामनि सुंदर । बसइ गरुड़ जाके उर अंतर ॥
 परम प्रकास रूप दिन राती । नहिं कछु चहिअ दिआ घृत बाती ॥
 मोह दरिद्र निकट नहिं आवा । लोभ बात नहिं ताहि बुझावा ॥
 प्रबल अबिद्या तम मिटि जाई । हारहिं सकल सलभ समुदाई ॥
 खल कामादि निकट नहिं जाहीं । बसइ भगति जाके उर माहीं ॥

गरल सुधासम अरि हित होई । तेहि मनि बिनु सुख पाव न कोई ॥
 व्यापहिं मानस रोग न भारी । जिन्ह के बस सब जीव दुखारी ॥
 राम भगति मनि उर बस जाके । दुख लवलेस न सपनेहुँ ताके ॥
 चतुर सिरोमनि तेइ जग माहीं । जे मनि लागि सुजतन कराहीं ॥
 सो मनि जदपि प्रगट जग अहई । राम कृपा बिनु नहिं कोउ लहई ॥
 सुगम उपाय पाइबे केरे । नर हतभाग्य देहिं भटमेरे ॥
 पावन पर्वत बेद पुराना । राम कथा रुचिराकर नाना ॥
 मर्मी सज्जन सुमति कुदारी । ग्यान बिराग नयन उरगारी ॥
 भाव सहित खोजइ जो प्रानी । पाव भगति मनि सब सुख खानी ॥
 मोरें मन प्रभु अस बिस्वासा । राम ते अधिक राम कर दासा ॥
 राम सिंधु घन सज्जन धीरा । चंदन तरु हरि संत समीरा ॥
 सब कर फल हरि भगति सुहाई । सो बिनु संत न काहूँ पाई ॥
 अस बिचारि जोइ कर सतसंगा । राम भगति तेहि सुलभ बिहंगा ॥

दो. ब्रह्म पयोनिधि मंदर ग्यान संत सुर आहिं ।
 कथा सुधा मधि काढ़िं भगति मधुरता जाहिं ॥ १२०(क) ॥

बिरति चर्म असि ग्यान मद लोभ मोह रिपु मारि ।
 जय पाइअ सो हरि भगति देखु खगेस बिचारि ॥ १२०(ख) ॥

पुनि सप्रेम बोलेउ खगराऊ । जौ कृपाल मोहि ऊपर भाऊ ॥
 नाथ मोहि निज सेवक जानी । सप्त प्रस्न कहहु बखानी ॥
 प्रथमहिं कहहु नाथ मतिधीरा । सब ते दुर्लभ कवन सरीरा ॥
 बड़ दुख कवन कवन सुख भारी । सोउ संछेपहिं कहहु बिचारी ॥
 संत असंत मरम तुम्ह जानहु । तिन्ह कर सहज सुभाव बखानहु ॥
 कवन पुन्य श्रुति बिदित बिसाला । कहहु कवन अध परम कराला ॥
 मानस रोग कहहु समुझाई । तुम्ह सबंग्य कृपा अधिकाई ॥
 तात सुनहु सादर अति प्रीती । मै संछेप कहउँ यह नीती ॥
 नर तन सम नहिं कवनिउ देही । जीव चराचर जाचत तेही ॥
 नरग स्वर्ग अपवर्ग निसेनी । ग्यान बिराग भगति सुभ देनी ॥
 सो तनु धरि हरि भजहिं न जे नर । होहिं बिषय रत मंद मंद तर ॥
 काँच किरिच बदलें ते लेही । कर ते डारि परस मनि देही ॥
 नहिं दरिद्र सम दुख जग माहीं । संत मिलन सम सुख जग नाही ॥
 पर उपकार बचन मन काया । संत सहज सुभाउ खगराया ॥
 संत सहहिं दुख परहित लागी । परदुख हेतु असंत अभागी ॥
 भूर्ज तरु सम संत कृपाला । परहित निति सह बिपति बिसाला ॥
 सन इव खल पर बंधन करई । खाल कढ़ाइ बिपति सहि मरई ॥
 खल बिनु स्वारथ पर अपकारी । अहि मूषक इव सुनु उरगारी ॥
 पर संपदा बिनासि नसाहीं । जिमि ससि हति हिम उपल बिलाहीं ॥
 दुष्ट उदय जग आरति हेतू । जथा प्रसिद्ध अधम ग्रह केतू ॥
 संत उदय संतत सुखकारी । बिस्व सुखद जिमि इंद्रु तमारी ॥
 परम धर्म श्रुति बिदित अहिंसा । पर निंदा सम अध न गरीसा ॥
 हर गुर निंदक दादुर होई । जन्म सहस्त्र पाव तन सोई ॥
 द्विज निंदक बहु नरक भोग करि । जग जनमइ बायस सरीर धरि ॥
 सुर श्रुति निंदक जे अभिमानी । रौरव नरक परहिं ते प्रानी ॥
 होहिं उलूक संत निंदा रत । मोह निसा प्रिय ग्यान भानु गत ॥

सब के निंदा जे जड़ करहीं । ते चमगादुर होइ अवतरहीं ॥
 सुनहु तात अब मानस रोगा । जिन्ह ते दुख पावहिं सब लोगा ॥
 मोह सकल ब्याधिन्ह कर मूला । तिन्ह ते पुनि उपजहिं बहु सूला ॥
 काम बात कफ लोभ अपारा । क्रोध पित्त नित छाती जारा ॥
 प्रीति करहिं जौ तीनिउ भाई । उपजइ सन्यपात दुखदाई ॥
 विषय मनोरथ दुर्गम नाना । ते सब सूल नाम को जाना ॥
 ममता दादु कंडु इरषाई । हरष बिषाद गरह बहुताई ॥
 पर सुख देखि जरनि सोइ छई । कुष्ट दुष्टता मन कुटिलई ॥
 अहंकार अति दुखद डमरुआ । दंभ कपट मद मान नेहरुआ ॥
 तृस्ना उदरबृद्धि अति भारी । त्रिविध ईषना तरुन तिजारी ॥
 जुग विधि ज्वर मत्सर अबिबेका । कहँ लागि कहौं कुरोग अनेका ॥

दो. एक ब्याधि बस नर मरहिं ए असाधि बहु ब्याधि ।
 पीड़हिं संतत जीव कहूँ सो किमि लहै समाधि ॥ १२१(क) ॥

नेम धर्म आचार तप ग्यान जग्य जप दान ।
 भेषज पुनि कोटिन्ह नहिं रोग जाहिं हरिजान ॥ १२१(ख) ॥

एहि बिधि सकल जीव जग रोगी । सोक हरष भय प्रीति बियोगी ॥
 मानक रोग कछुक मैं गाए । हहिं सब कें लखि बिरलेन्ह पाए ॥
 जाने ते छीजहिं कछु पापी । नास न पावहिं जन परितापी ॥
 विषय कुपथ्य पाइ अंकुरे । मुनिहु हृदयँ का नर बापुरे ॥
 राम कृपाँ नासहि सब रोगा । जौ एहि भाँति बनै संयोगा ॥
 सदगुर बैद बचन बिस्वासा । संजम यह न विषय कै आसा ॥
 रघुपति भगति सजीवन मूरी । अनूपान श्रद्धा मति पूरी ॥
 एहि बिधि भलेहिं सो रोग नसाहीं । नाहिं त जतन कोटि नहिं जाहीं ॥
 जानिअ तब मन बिरुज गोसाँई । जब उर बल बिराग अधिकाई ॥
 सुमति छुधा बाढ़इ नित नई । विषय आस दुर्बलता गई ॥
 विमल ग्यान जल जब सो नहाई । तब रह राम भगति उर छाई ॥
 सिव अज सुक सनकादिक नारद । जे मुनि ब्रह्म बिचार बिसारद ॥
 सब कर मत खगनायक एहा । करिअ राम पद पंकज नेहा ॥
 श्रुति पुरान सब ग्रंथ कहाहीं । रघुपति भगति बिना सुख नाही ॥
 कमठ पीठ जामहिं बरु बारा । बंध्या सुत बरु काहुहि मारा ॥
 फूलहिं नभ बरु बहुबिधि फूला । जीव न लह सुख हरि प्रतिकूला ॥
 तृषा जाइ बरु मृगजल पाना । बरु जामहिं सस सीस बिषाना ॥
 अंधकारु बरु रविहि नसावै । राम बिमुख न जीव सुख पावै ॥
 हिम ते अनल प्रगट बरु होई । बिमुख राम सुख पाव न कोई ॥
 दो० प्वारि मथें घृत होइ बरु सिकता ते बरु तेल ।

बिनु हरि भजन न भव तरिअ यह सिद्धांत अपेल ॥ १२२(क) ॥

मसकहि करइ बिरंचि प्रभु अजहि मसक ते हीन ।
 अस बिचारि तजि संसय रामहि भजहिं प्रवीन ॥ १२२(ख) ॥

श्लोक- विनिच्छ्रतं वदामि ते न अन्यथा वचांसि मे ।
 हरिं नरा भजन्ति येऽतिदुस्तरं तरन्ति ते ॥ १२२(ग) ॥

कहेउँ नाथ हरि चरित अनूपा । ब्यास समास स्वमति अनुरूपा ॥
 श्रुति सिद्धांत इहइ उरगारी । राम भजिअ सब काज बिसारी ॥
 प्रभु रघुपति तजि सेइअ काही । मोहि से सठ पर ममता जाही ॥
 तुम्ह बिग्यानरूप नहिं मोहा । नाथ कीन्ह मो पर अति छोहा ॥
 पूछिहुँ राम कथा अति पावनि । सुक सनकादि संभु मन भावनि ॥
 सत संगति दुर्लभ संसारा । निमिष दंड भरि एकउ बारा ॥
 देखु गरुड़ निज हृदयँ बिचारी । मैं रघुबीर भजन अधिकारी ॥
 सकुनाधम सब भाँति अपावन । प्रभु मोहि कीन्ह विदित जग पावन ॥

दो. आजु धन्य मैं धन्य अति जद्यपि सब विधि हीन ।
 निज जन जानि राम मोहि संत समागम दीन ॥ १२३(क) ॥

नाथ जथामति भाषेउँ राखेउँ नहिं कछु गोइ ।
 चरित सिंधु रघुनायक थाह कि पावइ कोइ ॥ १२३ ॥

सुमिरि राम के गुन गन नाना । पुनि पुनि हरष भुसुंडि सुजाना ॥
 महिमा निगम नेति करि गाई । अतुलित बल प्रताप प्रभुताई ॥
 सिव अज पूज्य चरन रघुराई । मो पर कृपा परम मृदुलाई ॥
 अस सुभाउ कहूँ सुनउँ न देखउँ । केहि खगेस रघुपति सम लेखउँ ॥
 साधक सिद्ध बिमुक्त उदासी । कवि कोविद कृतग्य संन्यासी ॥
 जोगी सूर सुतापस ग्यानी । धर्म निरत पंडित बिग्यानी ॥
 तरहिं न बिनु सेएँ मम स्वामी । राम नमामि नमामि नमामी ॥
 सरन गएँ मो से अघ रासी । होहिं सुद्ध नमामि अबिनासी ॥

दो. जासु नाम भव भेषज हरन घोर त्रय सूल ।
 सो कृपालु मोहि तो पर सदा रहउ अनुकूल ॥ १२४(क) ॥

सुनि भुसुंडि के बचन सुभ देखि राम पद नेह ।
 बोलेउ प्रेम सहित गिरा गरुड़ बिगत संदेह ॥ १२४(ख) ॥

मै कृत्कृत्य भयउँ तव बानी । सुनि रघुबीर भगति रस सानी ॥
 राम चरन नूतन रति भई । माया जनित बिपति सब गई ॥
 मोह जलधि बोहित तुम्ह भए । मो कहँ नाथ बिबिध सुख दए ॥
 मो पहिं होइ न प्रति उपकारा । बंदउँ तव पद बारहिं बारा ॥
 पूरन काम राम अनुरागी । तुम्ह सम तात न कोउ बड़भागी ॥
 संत बिटप सरिता गिरि धरनी । पर हित हेतु सबन्ह कै करनी ॥
 संत हृदय नवनीत समाना । कहा कबिन्ह परि कहै न जाना ॥
 निज परिताप द्रवइ नवनीता । पर दुख द्रवहिं संत सुपुनीता ॥
 जीवन जन्म सुफल मम भयऊ । तव प्रसाद संसय सब गयऊ ॥
 जानेहु सदा मोहि निज किंकर । पुनि पुनि उमा कहइ बिहंगबर ॥

दो. तासु चरन सिरु नाइ करि प्रेम सहित मतिधीर ।
 गयउ गरुड़ बैकुंठ तब हृदयँ राखि रघुबीर ॥ १२५(क) ॥

गिरिजा संत समागम सम न लाभ कछु आन ।

बिनु हरि कृपा न होइ सो गावहिं वेद पुरान ॥१२५(ख) ॥

कहेउँ परम पुनीत इतिहासा । सुनत श्रवन छुटहिं भव पासा ॥
प्रनत कल्पतरु करुना पुंजा । उपजइ प्रीति राम पद कंजा ॥
मन क्रम बचन जनित अघ जाई । सुनहिं जे कथा श्रवन मन लाई ॥
तीर्थाटन साधन समुदाई । जोग बिराग ग्यान निपुनाई ॥
नाना कर्म धर्म ब्रत दाना । संजम दम जप तप मख नाना ॥
भूत दया द्विज गुर सेवकाई । बिद्या विनय विवेक बड़ाई ॥
जहँ लागि साधन बेद बखानी । सब कर फल हरि भगति भवानी ॥
सो रघुनाथ भगति श्रुति गाई । राम कृपाँ काहूँ एक पाई ॥

दो. मुनि दुर्लभ हरि भगति नर पावहिं विनहिं प्रयास ।
जे यह कथा निरंतर सुनहिं मानि विस्वास ॥१२६ ॥

सोइ सर्वग्य गुनी सोइ गयाता । सोइ महि मंडित पंडित दाता ॥
धर्म परायन सोइ कुल व्राता । राम चरन जा कर मन राता ॥
नीति निपुन सोइ परम सयाना । श्रुति सिद्धांत नीक तेहिं जाना ॥
सोइ कवि कोविद सोइ रनधीरा । जो छल छाड़ि भजइ रघुबीरा ॥
धन्य देस सो जहँ सुरसरी । धन्य नारि पतिव्रत अनुसरी ॥
धन्य सो भूपु नीति जो करई । धन्य सो द्विज निज धर्म न टरई ॥
सो धन धन्य प्रथम गति जाकी । धन्य पुन्य रत मति सोइ पाकी ॥
धन्य घरी सोइ जब सतसंगा । धन्य जन्म द्विज भगति अभंगा ॥

दो. सो कुल धन्य उमा सुनु जगत पूज्य सुपुनीत ।
श्रीरघुबीर परायन जेहिं नर उपज विनीत ॥१२७ ॥

मति अनुरूप कथा मैं भाषी । जद्यपि प्रथम गुप्त करि राखी ॥
तव मन प्रीति देखि अधिकाई । तब मैं रघुपति कथा सुनाई ॥
यह न कहिअ सठही हठसीलहि । जो मन लाइ न सुन हरि लीलहि ॥
कहिअ न लोभिहि क्रोधहि कामिहि । जो न भजइ सचराचर स्वामिहि ॥
द्विज द्रोहिहि न सुनाइअ कबहूँ । सुरपति सरिस होइ नृप जबहूँ ॥
राम कथा के तेइ अधिकारी । जिन्ह के सतसंगति अति प्यारी ॥
गुर पद प्रीति नीति रत जेई । द्विज सेवक अधिकारी तेई ॥
ता कहँ यह बिसेष सुखदाई । जाहि प्रानप्रिय श्रीरघुराई ॥

दो. राम चरन रति जो चह अथवा पद निर्बान ।
भाव सहित सो यह कथा करउ श्रवन पुट पान ॥१२८ ॥

राम कथा गिरिजा मैं बरनी । कलि मल समनि मनोमल हरनी ॥
संस्ति रोग सजीवन मूरी । राम कथा गावहिं श्रुति सूरी ॥
एहि महँ रुचिर सप्त सोपाना । रघुपति भगति केर पंधाना ॥
अति हरि कृपा जाहि पर होई । पाउँ देइ एहिं मारग सोई ॥
मन कामना सिद्धि नर पावा । जे यह कथा कपट तजि गावा ॥
कहहिं सुनहिं अनुमोदन करहीं । ते गोपद इव भवनिधि तरहीं ॥
सुनि सब कथा हृदयँ अति भाई । गिरिजा बोली गिरा सुहाई ॥
नाथ कृपाँ मम गत सदेहा । राम चरन उपजेउ नव नेहा ॥

दो. मैं कृतकृत्य भइउँ अब तव प्रसाद बिस्वेस ।
उपजी राम भगति दृढ़ बीते सकल कलेस ॥१२९ ॥

यह सुभ संभु उमा संवादा । सुख संपादन समन विषादा ॥
भव भंजन गंजन सदेहा । जन रंजन सज्जन प्रिय एहा ॥
राम उपासक जे जग माहीं । एहि सम प्रिय तिन्ह के कछु नाहीं ॥
रघुपति कृपाँ जथामति गावा । मैं यह पावन चरित सुहावा ॥
एहिं कलिकाल न साधन दूजा । जोग जग्य जप तप ब्रत पूजा ॥
रामहि सुमिरिअ गाइअ रामहि । संतत सुनिअ राम गुन ग्रामहि ॥
जासु पतित पावन बड़ बाना । गावहिं कवि श्रुति संत पुराना ॥
ताहि भजहि मन तजि कुटिलाई । राम भजें गति केहिं नहिं पाई ॥

छं. पाई न केहिं गति पतित पावन राम भजि सुनु सठ मना ।
गनिका अजामिल व्याध गीध गजादि खल तारे घना ॥
आभीर जमन किरात खस स्वपचादि अति अघरूप जे ।
कहि नाम बारक तेपि पावन होहिं राम नमामि ते ॥१ ॥

रघुवंस भूषन चरित यह नर कहहिं सुनहिं जे गावहीं ।
कलि मल मनोमल धोइ विनु श्रम राम धाम सिधावहीं ॥
सत पंच चौपाई मनोहर जानि जो नर उर धरै ।
दारुन अबिद्या पंच जनित बिकार श्रीरघुवर हरै ॥२ ॥

सुंदर सुजान कृपा निधान अनाथ पर कर प्रीति जो ।
सो एक राम अकाम हित निर्बानप्रद सम आन को ॥
जाकी कृपा लवलेस ते मतिमंद तुलसीदासहूँ ।
पायो परम विश्रामु राम समान प्रभु नाहीं कहूँ ॥३ ॥

दो. मो सम दीन न दीन हित तुम्ह समान रघुबीर ।
अस बिचारि रघुवंस मनि हरहु बिषम भव भीर ॥१३०(क) ॥

कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभहि प्रिय जिमि दाम ।
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम ॥१३०(ख) ॥

श्लोक-यत्पूर्व प्रभुणा कृतं सुकविना श्रीशम्भुना दुर्गमं
श्रीमद्रामपदाब्जभक्तिमनिशं प्राप्त्यै तु रामायणम् ।
मत्वा तद्रघुनाथमनिरतं स्वान्तस्तमःशान्तये
भाषाबद्धमिदं चकार तुलसीदासस्तथा मानसम् ॥१ ॥

पुण्यं पापहरं सदा शिवकरं विज्ञानभक्तिप्रदं
मायामोहमलापहं सुविमलं प्रेमाम्बुपूरं शुभम् ।
श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं भक्त्यावगाहन्ति ये
ते संसारपतङ्गघोरकिरणैर्दहन्ति नो मानवाः ॥२ ॥

मासपारायण, तीसवाँ विश्राम

नवान्हूपारायण, नवाँ विश्राम

इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
सप्तमः सोपानः समाप्तः ।
(उत्तरकाण्ड समाप्त)

आरति श्रीरामायनजी की । कीरति कलित ललित सिय पी की ॥
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद । बालमीक बिग्यान बिसारद ।
सुक सनकादि सेश अरु सारद । बरनि पवनसुत कीरति नीकी ॥ १ ॥

गावत वेद पुरान अष्टदस । छओ सास्त्र सब ग्रंथन को रस ।
मुनि जन धन संतन को सरबस । सार अंस संमत सबही की ॥ २ ॥

गावत संतत संभु भवानी । अरु घटसंभव मुनि बिग्यानी ।
ब्यास आदि कबिबर्ज बखानी । कागभुसुंडि गरुड के ही की ॥ ३ ॥

कलिमल हरनि बिषय रस फीकी । सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की ।
दलन रोग भव मूरि अमी की । तात मात सब बिधि तुलसी की ॥ ४ ॥

Shri Ram Charit Manas by Goswami Tulasidas was
encoded in ISCII by a group of volunteers at Ratlam.
The files were converted to ITRANS 5.21 encoding for
creating this version. The CSX+ version uses

fonts from Dr. John Smith's site and follows the
Draft transliteration schemes for Indic scripts
extracted from ISO/DIS15919 by Dr. Anthony Stone.

Please contact the following for additional details:

Vineet Chaitanya
vc@iiit.net
<http://www.iiit.net>

Avinash Chopde
avinash@acm.org
<http://www.aczone.com/>

Dr J. D. Smith
jds10@cam.ac.uk
<http://bombay.oriental.cam.ac.uk/index.html>

Dr Anthony P. Stone
stone_atend@compuserve.com
http://ourworld.compuserve.com/homepages/stone_atend/tra

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

Last updated October 27, 2000